A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 27 अगस्त, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 347, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रथम पूज्य गौरी नंदन का शुभ आगमन...

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा, एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।

प्रदेश के साथ देश की विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है मध्यप्रदेश : मुख्यमंत्री

पिछले 11 वर्षों में 30 प्रतिशत बढ़ी सौर ऊर्जा

● विद्युत उत्पादन के लिए सभी उपलब्ध संसाधनों का हो रहा है उपयोग ● मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नव नियुक्त विद्युत कार्मिकों को प्रदान किए नियुक्ति-पत्र

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का किया अभिनन्दन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वर्तमान युग में विद्युत (ऊर्जा) का महत्व वायु और जल के समान है। गर्व का विषय है कि हम उद्योगों और किसानों सहित सभी प्रदेशवासियों की बिजली की मांग के साथ देश की बिजली की जरूरत को भी पूरा कर रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली की मेट्रो ट्रेन मध्यप्रदेश की बिजली से चल रही है। अब इस तरह की योजना बनाई जा रही है कि वर्ष 2047 तक बिजली की कोई कमी नहीं होगी, प्रदेश ऊर्जा क्षेत्र में सरप्लस रहेगा। प्रदेश में विद्युत उत्पादन के लिए सभी उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है। देश में क्लीन एनर्जी के लिए गतिविधियों का विस्तार हो रहा है। प्रदेश में पिछले 11 वर्षों में सौर ऊर्जा 30 प्रतिशत बढ़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव 6 विद्युत कंपनियों के नवनियुक्त 1060 कार्मिकों को नियुक्त-पत्र वितरण और अभिनंदन समारोह को रवीन्द्र भवन में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को औषधीय पौधा भेंट कर स्वागत किया गया।

बिजली कंपनियों में 51 हजार से अधिक नए पद भरे जाएंगे

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बिजली कंपनियों के द्वारा एक हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटे जा रहे हैं। प्रदेश की बिजली कंपनियों में 51 हजार से अधिक नए पद भरे जाएंगे। इससे बिजली कम्पनियों की स्थिति सुदृढ़ होगी। किसान भाइयों को लगभग 20 हजार 267 करोड़ रुपए की सब्सिडी इस वर्ष दी जा रही है। प्रदेश के एक करोड़ से अधिक परिवारों को बिजली विभाग ने 6445 करोड़ रुपए की सब्सिडी प्रदान की है। प्रदेश में बिजली तैयार करने के लिए हर उपलब्ध संसाधन का उपयोग किया जा रहा है। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। सांची को प्रदेश की पहली सोलर सिटी बनाया गया है। राज्य के 32 लाख किसानों को सोलर पंप प्रदान किए जा रहे हैं। प्रदेश में उत्पादित क्लीन एनर्जी से बिजली, उद्योग का रूप ले रही है।

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई मंत्रि-परिषद की बैठक, लिए कई निर्णय

श्रीमहाकालेश्वर उज्जैन-इंदौर-पीथमपुर मेट्रो कॉरिडोर के लिये डी.पी.आर. बनाने परामर्श शुल्क की स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा उज्जैन-इंदौर-पीथमपुर लाइन के प्रथम चरण में श्रीमहाकालेश्वर उज्जैन लवकुश चौराहा, इंदौर एवं द्वितीय चरण में लवकुश चौराहा से पीथमपुर, मेट्रो रेल परियोजना की डीपीआर बनाने के कार्य के लिए दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड को परामर्श शुल्क 9 लाख रूपये प्रति किमी की दर (जीएसटी के अनुसार) का अनुमोदन किया गया।

* प्रदेश में 100 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजना एवं 60 मेगावाट पवन ऊर्जा परियोजना कैप्टिव मोड पर स्थापित करने का अनुमोदन
* ई-विवेचना ऐप के लिए 75 करोड़ रूपये से 25 हजार टैबलेट क्रय का निर्णय
* प्रति न्यायालय एक अभियोजक के सिद्धांत पर 610 नवीन पदों की स्वीकृति
* नपा, नगरपरिषद अध्यक्ष का अविश्वास रोकने आएगा अध्यादेश
* पुलिस कर्मियों को विवेचना के लिए मिलेंगे टैबलेट

मंत्रि-परिषद ने प्रदेश में संचालित क्राईम एंड क्रिमिनल ट्रेकिंग नेटवर्क एंड सिस्टम (सीसीटीएनएस) प्रोजेक्ट के सतत् क्रियान्वयन एवं संचालन के लिए 5 वर्षों (वर्ष 2021-22 से 2025-26) के लिए स्वीकृत लागत 102 करोड़ 88 लाख रूपये की योजना में ई-विवेचना ऐप के लिए 75 करोड़ रूपये से 25 हजार टैबलेट क्रय करने की स्वीकृति दी। संशोधित/विस्तारित योजना की कुल राशि 177 करोड़ 87 लाख 51 हजार रूपये की स्वीकृति प्रदान गयी। उल्लेखनीय है कि प्रदेश के सभी पुलिस थानों में सीसीटीएनएस प्रोजेक्ट 2012 से स्वीकृति है। नए चरण में सभी विवेचना अधिकारियों को इलेक्ट्रॉनिक टेबलेट दिया जाता है। जिससे मौके पर समस्त कार्यवाही हो सके। इसके लिए ई-विवेचना ऐप बनाया गया है। प्रथम चरण में 1732 टेबलेट खरीदे गए हैं।

610 नवीन पदों की स्वीकृति- मंत्रि-परिषद द्वाराभारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के प्रभावी क्रियान्वयन, आपराधिक न्याय प्रशासन के सुचारू संचालन एवं प्रदेश के सभी दण्ड न्यायालयों के समक्ष प्रति न्यायालय एक अभियोजक के सिद्धांत अनुसार अभियोजकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए लोक अभियोजन संचालनालय के तहत 610 नवीन पदों की स्वीकृति प्रदान की गई।

सुप्रभात

पगडंडी ने कहा सड़क से,
जरा ठहर भी जाना।
जल्दी जल्दी में खो बैठी,
तू हरियाला बाना।
कहा सड़क ने तेज़ गति में,
खुशियाँ फिसल गयी।
मुझे रौंद कर कितनी आगे,
दुनिया निकल गयी।
जाने कब से हुआ नहीं है,
गाँव में अपना जाना।
पगडंडी ने कहा सड़क से,
ज़रा ठहर भी जाना।
तारकोल से लिपटी लिपटी,
देह हो गयी काली।
बड़े बड़े पहियों में पिस कर,
बिखरी खून की लाली।
दुर्घटना से भली देर हैं,
कहता भले जमाना।
पगडंडी ने कहा सड़क से,
ज़रा ठहर भी जाना।
तू पगडंडी किस्मत वाली,
गुजरे खेतों मेड़ों से।
मन की बातें तू कह लेती,
रस्ते के भी पेड़ों से।
मेरी किस्मत में तो बस ये,
धूल धुवें का खाना।
पगडंडी ने कहा सड़क से,
ज़रा ठहर भी जाना

– गोविंद गुंजन

अलका के बाद आकाश और पवन के विभाग बदले

● केंद्र में पदस्थ एमपी कैडर के दो आईएएस अफसरों को मिली नई पोस्टिंग

भोपाल (नप्र)। केंद्र में पदस्थ एमपी कैडर की सीनियर आईएएस अधिकारी अलका उपाध्याय को अल्पसंख्यक आयोग का सचिव बनाए जाने के 3 दिन बाद एमपी कैडर के दो और आईएएस अधिकारियों के विभाग बदले गए हैं। ये अधिकारी आकाश त्रिपाठी और पवन कुमार शर्मा हैं। उधर पुलिस मुख्यालय भोपाल ने एमपी कैडर के दो आईपीएस को अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। डीओपीटी ने कैबिनेट की अपॉइंटमेंट्स कमेटी के अनुमोदन के बाद सोमवार को 17 आईएएस अफसरों के विभागों और पदनाम में फेरबदल के आदेश जारी किए हैं। इसमें एमपी कैडर के 1998 बैच के आईएएस अधिकारी आकाश त्रिपाठी अपर सचिव ऊर्जा मंत्रालय को मैनेजिंग डायरेक्टर सोलर एनर्जी कार्पोरेशन ऑफ इंडिया (नवीन और नवकरणीय ऊर्जा मंत्रालय) के पद पर पदस्थ किया गया है।

इसी तरह 1999 बैच के आईएएस अधिकारी पवन कुमार शर्मा को जॉइंट सेक्रेट्री से एडिशनल सेक्रेट्री के पद पर प्रमोट करते हुए अपर सचिव रक्षा मंत्रालय में ही पदस्थ किया गया है। शर्मा रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव के रूप में पहले से पदस्थ हैं। गौरतलब है कि इसके पहले एमपी में मुख्य सचिव अनुराग जैन के रिटायरमेंट के बाद सीएस पद के लिए दावेदारी जता रहीं अलका उपाध्याय को केंद्र सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग का सचिव बनाया है।

वैष्णो देवी में लैंडस्लाइड पांच लोगों की मौत

● 14 से ज्यादा घायल, अस्थाई रूप से रोकी गई यात्रा ● जम्मू में तावी नदी के पास सड़क धंसी

श्रीनगर (एजेंसी)। वैष्णो देवी यात्रा मार्ग में अर्धकुमारी के पास लैंडस्लाइड हो गई। न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार- हादसे में 5 लोग मारे गए, 14 घायल हैं। घायलों को कम्युनिटी हेल्थ सेंटर कटरा ले जाया गया है। हादसे के बाद वैष्णो देवी यात्रा स्थगित कर दी गई है। जम्मू और कश्मीर में भारी बारिश का दौर जारी है। हाल ही में भारी बारिश के चलते यात्रा को अगले आदेश तक रोक दिया गया था। साथ ही भारत मौसम विज्ञान विभाग ने भी रेड अलर्ट जारी किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अर्धकुंवारी स्थित इंद्रप्रस्थ भोजनालय के पास बचावकार्य जारी है। घटना दोपहर 3 बजे घटी। खास बात है कि यात्रा को सुबह ही रोक दिया गया था, लेकिन पुराने मार्ग पर दोपहर 1 बजकर 30 मिनट तक यह जारी थी। हालांकि, बाद में इसपर भी खराब मौसम के चलते अस्थाई रूप से रोक लगा दी गई थी। जम्मू में बीते तीन दिनों से लगातार बारिश जारी है। अधिकारियों ने बताया कि पहाड़ी पर स्थित मंदिर तक जाने वाले 12 किलोमीटर के घुमावदार रास्ते के लगभग आधे रास्ते पर यह घटना हुई। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने मंगलवार को कहा कि भारी बारिश के बाद जम्मू के विभिन्न हिस्सों में स्थिति काफी गंभीर है और उन्होंने प्रशासन को हाई अलर्ट बनाए रखने का निर्देश दिया। जम्मू में भारी बारिश के कारण तीन लोगों की मौत हो गई तथा दो दर्जन से अधिक मकान और पुल क्षतिग्रस्त हो गए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 27 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भारत पर आज से 50 फीसदी अमेरिकी टैरिफ

● नोटिफिकेशन जारी, नौकरियां जाने का खतरा बढ़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका ने मंगलवार को भारत पर एडिशनल 25 फीसदी टैरिफ लगाने का ऑफिशियल नोटिफिकेशन जारी कर दिया। भारतीय समय के अनुसार यह टैरिफ बुधवार यानी 27 अगस्त को सुबह 9.31 बजे लागू हो जाएगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 6 अगस्त को रूस से तेल खरीद पर जुर्माने के तौर

पर इस टैरिफ का ऐलान किया था। वहीं, व्यापार घाटे का हवाला देकर 7 अगस्त से भारत पर 25 फीसदी टैरिफ लगा दिया था। यानी अब अमेरिका निर्यात होने वाले भारतीय सामानों पर कुल टैरिफ 50 फीसदी तक हो जाएगा। आदेश में लिखा है,जो ड्यूटी इस दस्तावेज की सूची में बताई गई है, वह भारत से आने वाली चीजों पर लागू होगी।

सीआईएसएफ ने बनाई पहली ऑल वूमेन कमांडो यूनिट

● मध्य प्रदेश में एनएसजी कमांडो की तरह किया जा रहा ट्रेंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। जल्द ही आपको देश की संसद, दिल्ली मेट्रो, आईजीआई और मुंबई एयरपोर्ट समेत कई अन्य संवेदनशील प्वाइंट्स पर सीआईएसएफ की महिला कमांडो तैनात हुई दिखाई देंगी। इसके लिए सीआईएसएफ ने पहली बार ऑल वूमेन कमांडो यूनिट का गठन किया है। जिसमें 100 महिला कमांडो होंगी। जिन्हें देश के

बेहतरीन कमांडो माने जाने वाले एनएसजी कमांडो की तरह ट्रेनिंग दिलाई जाएगी। जो की आतंकवादी हमले से लेकर अन्य किसी भी तरह की इमरजेंसी के वक्त उसका मुंहतोड़ जवाब देने के लिए पूरी तरह से सक्षम होंगी। सीआईएसएफ के पीआरओ और डिप्टी कमांडेंट सरोज भूपेंद्र ने बताया कि सीआईएसएफ अपनी पहली ऑल वूमेन महिला कमांडो टीम को मेन ऑपरेशनल रोल में शामिल करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

बिहार के पूर्णिया एयरपोर्ट से उड़ान भरने का इंतजार खत्म

सितंबर में पीएम मोदी करेंगे उद्घाटन, सम्राट चौधरी ने बताया

पूर्णिया/पटना (एजेंसी)। बिहार के लोग जिस पूर्णिया एयरपोर्ट का इंतजार कर रहे थे, अब वो खत्म होने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सितंबर में पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन करेंगे। बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने जानकारी दी कि

पीएम मोदी हवाई सेवा की शुरुआत करेंगे। उन्होंने यह घोषणा मंगलवार को पटना के ज्ञान भवन में आयोजित भाजयुमो के कार्यक्रम में की। माना जा रहा है कि पीएम मोदी अपने जन्मदिन 17 सितंबर को राज्य के चौथे पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन करेंगे। पटना, दरभंगा और गया के बाद पूर्णिया एयरपोर्ट से भी उड़ानें शुरू होंगी। सितंबर की शुरुआत में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (डीजीसीए) से मंजूरी मिलने की संभावना है। पूर्णिया हवाई अड्डे से 13 साल बाद फिर से वाणिज्यिक उड़ानें शुरू होंगी।

शी जिनपिंग करेंगे मोदी और पुतिन का व्यक्तिगत स्वागत

● एससीओ समिट से अमेरिका को संदेश या कोई नई चाल,चलेगा पता

बीजिंग (एजेंसी)। चीन और भारत जिस तरह से गर्मजोशी के साथ एक दूसरे के स्वागत में रेड कार्पेट बिछा रहे हैं, वो थोड़ा हैरान करने वाला है। नई दिल्ली में पहले चीनी विदेश मंत्री वांग यी का जोरदार स्वागत किया गया और अब चीन से आ रही

रिपोर्ट्स के मुताबिक, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का व्यक्तिगत तौर पर स्वागत करने वाले हैं। रिपोर्ट के मुताबिक चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग इस महीने 31 अगस्त और 1 सितंबर को तियानजिन में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का व्यक्तिगत स्वागत करेंगे। पिछले सात सालों में ये पहला मौका होगा जब भारतीय पीएम का चीन का दौरा होगा।

गजकेसरी योग में आज घर-घर विराजेंगे बप्पा

बन रहा है महासंयोग, स्थापना के लिए रहेंगे दो मुहूर्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। कल 27 अगस्त को गणेश चतुर्थी है। इस दिन, चित्रा नक्षत्र, बुधवार और भाद्रपद महीने की चतुर्थी तिथि से शुभ संयोग बन रहा है। गणेश पुराण में बताया गया है कि ऐसे ही संयोग में देवी पार्वती ने दोपहर के समय गणपति की मूर्ति बनाई थी, जिसमें भगवान शिव ने प्राण डाले थे। इस खास दिन पर गणपति की स्थापना के लिए दो शुभ मुहूर्त रहेंगे। भादौ महीने की इस गणेश चतुर्थी पर गणपति को सिद्धि विनायक रूप में पूजने का विधान है। इस रूप की पूजा भगवान विष्णु ने की थी और ये नाम भी दिया। गणेश जी के सिद्धि विनायक रूप की पूजा हर मांगलिक काम से पहले होती है। माना जाता है गणेश जी का ये रूप सुख और समृद्धि देने वाला होता है। इनकी पूजा से हर काम में सफलता मिलती है। इसलिए इन्हें सिद्धि विनायक कहते हैं। कल बुधवार होने से दिन के देवता गणेश भगवान होंगे और तिथि भी गणपति को ही समर्पित होगी।

नेवी में शामिल हुए आईएनएस उदयगिरि और हिमगिरि

● दोनों स्वदेशी युद्धपोत, दुश्मन के रडार में नहीं आएंगे

अपनी ब्रह्मोस और बराक-8 जैसी मिसाइलों से लैस

मुंबई (एजेंसी)। इंडियन नेवी को मंगलवार को दो नए युद्धपोत आईएनएस उदयगिरि और आईएनएस हिमगिरि मिले। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, ये दोनों स्वदेशी जहाज हैं। इन्हें इस तरह डिजाइन किया गया है कि ये दुश्मन के रडार, इंफ्रारेड और ध्वनि सेंसर से बचे रहेंगे।

इनकी तैनाती से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में होगी, जिससे नौसेना की ताकत बढ़ेगी। दोनों युद्धपोत ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल और भारत-इजराइल बराक-8 लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली से लैस है। इनमें 76 एमएम नौसैनिक बंदूकें और समुद्री युद्ध में पानी के अंदर चलने वाला टारपीडो विस्फोटक हथियार भी है। आईएनएस हिमगिरि को कोलकाता के गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स ने बनाया है। इसका नाम पुराने आईएनएस हिमगिरि से लिया गया है। आईएनएस

उदयगिरि को मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने बनाया है। इसका नाम आंध्र प्रदेश की उदयगिरि पर्वत सीरीज के नाम पर रखा गया है, जो सिर्फ 37 महीनों में बना है। 18 जून को देश के पहले एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट आईएनएस अर्णाला का कमीशन हुआ था। इसे विशाखापटट्नम में कमीशन किया गया था।

यादव महासभा सीएम के समर्थन में, कहा- अपमान नहीं सहेंगे

न कृष्ण माखन चोर, न लालू चारा चोर, न अखिलेश टोंटी चोर; सिंगार को दिया अल्टीमेटम

भोपाल (नप्र)। भगवान श्रीकृष्ण को 'माखन चोर' और 'वस्त्र चोर' कहकर संबोधित करने वालों को लेकर यादव महासभा ने सख्त रुख अपनाया है। संगठन के छात्र विंग के प्रदेश अध्यक्ष प्रियेश यादव ने कहा कि समाज अपने आराध्य और नेताओं का किसी भी तरह का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगा।

उन्होंने साफ शब्दों में कहा- न वह माखन चोर थे, न वस्त्र चोर। न लालू यादव जी चारा चोर हैं, न अखिलेश यादव जी टोंटी चोर। उनको भी लगातार इस तरह के शब्द बोले जाते हैं, जो पूरी तरह गलत हैं। श्रीकृष्ण सत्य के रक्षक, समाजसेवी और धर्म नायक

प्रियेश यादव ने कहा कि सनातन इतिहास में भगवान श्रीकृष्ण जैसा सत्य का रक्षक और समाजसेवी दूसरा कोई नहीं

हुआ। लेकिन दुर्भाग्य है कि कुछ लोग धार्मिक कथाओं को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं और मनगढ़ंत कहानियों से उनके चरित्र पर उंगली उठाते हैं। यह न केवल श्रद्धा का अपमान है बल्कि सांस्कृतिक मर्यादाओं के भी खिलाफ है। उन्होंने चेतावनी दी कि ऐसे लोगों को तुरंत अपनी भाषा सुधार लेनी चाहिए, वरना यादव महासभा सड़कों पर उतरकर कड़ा विरोध करेगी।

मुख्यमंत्री मोहन यादव के समर्थन में संगठन- प्रियेश यादव ने कहा कि यादव महासभा छात्र विंग मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि जो भी लोग भगवान श्रीकृष्ण को अपमानजनक शब्दों से संबोधित कर रहे हैं, वे यह समझ लें कि यादव समाज इसे कतई बर्दाश्त नहीं करेगा।

उमंग सिंघार को 7 दिन का अल्टीमेटम- प्रियेश यादव ने मध्य प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार की टिप्पणी पर भी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा- सिंघार जी ने डॉ. मोहन यादव के बयान को लेकर जिस तरह की आपत्तिजनक टिप्पणी की है, उसकी हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं। यदि 7 दिनों के भीतर उन्होंने सार्वजनिक रूप से माफी नहीं मांगी, तो यादव समाज उनके बंगले का घेराव करेगा और पुतला दहन किया जाएगा।

मोहन यादव ने क्या कहा?- मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कहा भगवान कृष्ण का माखन के प्रति जो लगाव है, वो ऐसा है कि उस समय कंस के घर माखन जाता था। भगवान कृष्ण का आक्रोश था कि ये कंस हमारा माखन खाकर हम पर ही अत्याचार कर रहा है।

राहुल-तेजस्वी की 'वोटर अधिकार यात्रा' में तिरंगे का हो गया अपमान

● कांग्रेस कार्यकर्ताओं के पैरों तले दिखा राष्ट्रीय ध्वज, रौंदते दिखे

सुपौल (एजेंसी)। बिहार में राहुल गांधी और तेजस्वी यादव की अगुवाई में चल रही वोटर अधिकार यात्रा के दौरान तिरंगे का अपमान

होने के आरोप लगे हैं। राहुल गांधी की वोट अधिकार यात्रा के दौरान सुपौल के हुसैन चौक पर झंडे की लूट के दौरान तिरंगे का अपमान देखने को मिला। इस दौरान सड़क पर गिरे तिरंगे को कार्यकर्ता पैरों के तले रौंदते देखे गए। लेकिन किसी की नजर तिरंगे के अपमान पर नही गयी। हालांकि राहुल की वोट अधिकार यात्रा से सुपौल से निकलकर मधुबनी में प्रवेश कर चुकी है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी और उनके कई कैबिनेट सहयोगी मंगलवार को बिहार में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की ' वोटर अधिकार यात्रा ' में शामिल होने पहुंचे। रेड्डी, उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क और दिल्ली में मौजूद अन्य मंत्री राजधानी से बिहार पहुंचकर यात्रा में शामिल हुए।

मैं जन्मजात कांग्रेसी हूं और कांग्रेसी ही मरूंगा

डीके शिवकुमार बोले-मैंने भाजपा की टांग खींचने की कोशिश की

बेंगलुरु (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रार्थना वंदना गाने को लेकर विवाद के बीच कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने

मंगलवार को फिर से सफाई दी। उन्होंने कहा- मैंने उनकी (भाजपा) टांग खींचने की कोशिश की थी। मेरे कुछ दोस्त इसका राजनीतिक दुरुपयोग करके भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। शिवकुमार ने कहा- मैं जन्मजात कांग्रेसी हूं और एक कांग्रेसी के रूप में ही मरूंगा। कांग्रेस पार्टी और गांधी परिवार के प्रति मेरी ईमानदारी पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। अगर कांग्रेसियों और इंडिया ब्लॉक को मेरी टिप्पणी से ठेस पहुंची है, तो मुझे दुख है।

दुनिया में अब 'मेड इन इंडिया' लिखी ईवी चलेगी : प्रधानमंत्री

● मोदी बोले-मारुति की पहली ईवी को हरी झंडी दिखाई

गुजरात के प्लांट से 100 देशों को की जाएगी निर्यात

अहमदाबाद (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज यानी मंगलवार को गुजरात के हंसलपुर में ई-विटारा को एक्सपोर्ट के लिए फ्लैग-ऑफ किया। ये मारुति की पहली इलेक्ट्रिक कार है। ये गाड़ी पूरी तरह से भारत में ही बनी है और इसे 100 से ज्यादा देशों, जैसे यूरोप और जापान में निर्यात किया जाएगा। पीएम मोदी ने कार्यक्रम के दौरान लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आज मेक इन इंडिया में नया अध्याय जुड़ा है। अब विदेशों में चलने वाली इलेक्ट्रिक गाड़ियों पर भी मेड इन इंडिया लिखा होगा। इस कार में 49 केवीएच और 61 केवीएच के दो बैटरी पैक ऑप्शन मिलेंगे। कंपनी का दावा है कि कार एक

बार फुल चार्ज करने पर 500 किलोमीटर से ज्यादा चलेगी। इलेक्ट्रिक एसयूवी का प्रोडक्शन फरवरी-2025 से सुजुकी मोटर गुजरात प्राइवेट लिमिटेड के प्लांट में हो चुका है।

भाजपा अध्यक्ष पद की रेस में सबसे आगे शिवराज !

● संघ चीफ मोहन भागवत से मीटिंग के बाद अटकलें तेज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष के नाम पर अब तक मुहर नहीं लग सकी है। साथ ही पार्टी की तरफ से कोई तारीख सार्वजनिक नहीं की गई है। अब कहा जा रहा है कि बीजेपी बिहार विधानसभा चुनाव का शेड्यूल आने से पहले अध्यक्ष के नाम का ऐलान कर सकती है। साथ ही आरएसएस

यानी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख प्रमुख मोहन भागवत के साथ केंद्रीय मंत्री की मुलाकात ने अटकलें तेज कर दी हैं। हालांकि, भाजपा की तरफ से आधिकारिक तौर पर साफ नहीं किया गया है कि अगले प्रमुख के नाम की घोषणा कब होगी। सूत्र बताते हैं कि पार्टी आलाकमान की तरफ से सूची तैयार कर ली गई है।

भारत शांतिप्रिय देश लेकिन शांतिवादी नहीं

● सीडीएस बोले-शांति चाहिए तो युद्ध के लिए तैयार रहें ● मध्यप्रदेश के महू में कहा-ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है

महू (एजेंसी)। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ अनिल चौहान ने कहा कि भले ही भारत शांतिप्रिय देश है, लेकिन हम 'शांतिवादी' नहीं हैं। दुश्मन गलतफहमी में न रहे। देश की सेनाएं युद्ध के लिए हमेशा तैयार हैं। सीडीएस मंगलवार को मध्यप्रदेश के महू स्थित आर्मी वॉर कॉलेज में आयोजित रण संवाद-2025 कार्यक्रम में बोल रहे थे। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और तीनों सेनाओं के चीफ भी शामिल हो रहे हैं। सीडीएस ने कहा कि शक्ति के बिना शांति एक 'यूटोपियन' धारणा है। जनरल ने राष्ट्रकवि दिनकर की पंक्तियां दोहराते हुए कहा, 'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो, उसको क्या जो दंतहीन, विषरहित, विनीत, सरल हो।'अगर आप शांति चाहते हैं तो युद्ध के लिए तैयार रहें। क्योंकि, शक्ति से ही शांति आ सकती है।

● **ऑपरेशन सिंदूर जारी है, शस्त्र और शास्त्र एक साथ फॉलो करेंगे-** सीडीएस ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है। ऑपरेशन सिंदूर एक आधुनिक संघर्ष था, जिससे हमने कई सबक सीखे। उनमें से ज्यादातर पर अमल चल रहा है। सीडीएस ने कहा- गीता और महाभारत में युद्ध नीति के सबसे बेहतरीन उदाहरण हैं। चाणक्य की नीति ने चंद्रगुप्त को विजय दिलाई। उन्होंने कहा है शक्ति, उत्साह और युक्ति... युद्ध नीति के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। शस्त्र और शास्त्र दोनों को एक साथ फॉलो करने की जरूरत है। जनरल चौहान ने कहा कि निकट भविष्य की जंग बेहद खतरनाक होगी, उसमें हम मिलकर (थलसेना, वायुसेना और नौसेना) ही जीत हासिल कर सकते हैं। सीडीएस ने कहा कि हमें हर हालात में सशक्त और आत्मनिर्भर बनना है। हम ऑपरेशन सिंदूर के आगे क्या है उस पर चर्चा कर रहे हैं।

पाँचवें शांति-गया स्मृति सम्मान घोषित

भोपाल। साहित्य, कला और खेल के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले रचनाकारों और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए, शांति- गया स्मृति साहित्य, कला एवं खेल संवर्द्धन समिति ने अपने पाँचवें शांति-गया स्मृति सम्मान की घोषणा की है। इस वर्ष बड़ी संख्या में प्राप्त प्रविष्टियों ने यह साबित कर दिया है कि इन तीनों क्षेत्रों में आज भी नई ऊर्जा और रचनात्मकता भरी हुई है। गहन मूल्यांकन के बाद, समिति ने चयनित नामों की घोषणा की है, जो इस प्रकार हैं ।

साहित्य विधा के अंतर्गत शांति-गया स्मृति शिखर सम्मान- प्रख्यात साहित्यकार डॉ. अखिलेश पलारिया (राजस्थान), नैली राजेश सिंह स्मृति कहानी सम्मानः सुषमा मुनींद्र, अजय सिंह राणा (विशेष सम्मान), नैली राजेश सिंह स्मृति कविता सम्मानः आशीष दशोत्तर (रतलाम), अनूप श्रीवास्तव स्मृति व्यंग्य सम्मानः प्रभाशंकर उपाध्याय व अजय अनुरागी, तथा सुनील सक्सेना (विशेष सम्मान)। कला विधा के तहत फोटोग्राफीः दिनेश मवार। तथा दुर्गा उन्हाले (देवी आर्ट्स)।

खेल विधा में अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी-सुबोध खांडेकर, खेल समीक्षकः आत्माराम भाटी। यह जानकारी समिति के संयोजक अरूण अर्णव खरे ने दी।

दामिनी सिंह ठाकुर को श्रीकृष्ण सरल स्मृति सम्मान

भोपाल। साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश द्वारा वरिष्ठ लेखिका दामिनी सिंह ठाकुर (इंदौर) को श्रीकृष्ण सरल स्मृति प्रादेशिक सम्मान (वर्ष 2022) से सम्मानित किया गया। रवीन्द्र भवन में आयोजित अलंकरण समारोह में उन्हें उनकी काव्य कृति तिशनगी के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। संचालक संस्कृति विभाग, मप्र एन.पी. नामदेव, ख्यात कामेंटेटर पद्म सुशील दोशी और साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश के निदेशक डॉ. विकास दवे के हाथों उन्होंने यह सम्मान ग्रहण किया।

राज्यपाल ने प्रदेशवासियों को दी गणेश चतुर्थी की शुभकामनाएँ

भोपाल(नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। प्रदेशवासियों के स्वस्थ, सुखद और मंगलमय जीवन की कामना की है। राज्यपाल श्री पटेल ने शुभकामना संदेश में कहा है कि गणेश चतुर्थी का पर्व सामाजिक एकता, सौहार्द्र और लोक संस्कृति के संवर्धन का विशेष अवसर है। उन्होंने कहा कि विघ्नहर्ता, मंगलकर्ता बुद्धि, विवेक, समृद्धि और सौभाग्य के अधिष्ठाता देव भगवान श्री गणेश की पूजा, आराधना का उत्सव है। श्रद्धा, विश्वास और उत्साह का प्रतीक है। गणेश चतुर्थी का उत्सव हम सबको ज्ञान, संयम और सकारात्मक दृष्टिकोण से सभी चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

99 एकड़ जमीन पर कब्जे की आशंका,12 पटवारी करेंगे नप्ती

भोपाल के 'मछली' परिवार पर आज से फिर कार्रवाई; कोठी के ताले खुले-बदले जाने की आशंका

भोपाल (नप्र)। 23 दिन में 7 प्रॉपर्टी जमींदोज करने और करीब 125 करोड़ रुपए की सरकारी जमीन से कब्जा हटाने के बाद जिला प्रशासन 'मछली' परिवार पर फिर से शिकंजा कंसने वाला है। भोपाल के अनंतपुरा कोकता बायपास क्षेत्र में ही पशुपालन विभाग की 99 एकड़ जमीन का सीमांकन होगा। बुधवार से जमीन की नप्ती का प्लान तैयार किया है। इसमें 2 राजस्व निरीक्षक और 12 से ज्यादा पटवारी जुटेंगे। कार्रवाई से पहले सोमवार को प्लान का प्रजेंटेशन भी कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को दिखाया गया। यह कार्रवाई गोविंदपुरा एसडीएम रवीश कुमार श्रीवास्तव और तहसीलदार सौरभ वर्मा करेंगे। सूत्रों के अनुसार, 99 एकड़ में से काफी हिस्से में मछली परिवार का दखल सामने आया है। एक कॉलोनी का कुछ हिस्सा भी शामिल हैं। इसलिए इसकी पड़ताल की जा रही है। मछली परिवार समेत 20 लोगों को पहले ही नोटिस दिए जा चुके हैं।

12 से 13 रकबा में पूरी जमीनः जानकारी के अनुसार, 99 एकड़ जमीन का सीमांकन करने में 7 से 10 दिन का समय लग सकता है। यह जमीन 12 से 13 रकबे में है। एडीएम अंकुर मेश्राम ने बताया कि कार्रवाई को लेकर प्लान तैयार किया है। बुधवार से सीमांकन की शुरुआत कर दी जाएगी।

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत ने मंत्रालय में विभागीय योजनाओं की समीक्षा की।

एनसीटीई पाठ्यक्रमों में प्रवेश में लिए तृतीय अतिरिक्त चरण

●27 से 29 अगस्त तक होंगे ऑनलाइन पंजीयन

भोपाल (नप्र)। उच्च शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिये एनसीटीई पाठ्यक्रम संचालित करने वाले शासकीय/अनुदान प्राप्त अशासकीय/ अशासकीय महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए तृतीय अतिरिक्त चरण की समय सारणी जारी की है। जारी समय सारणी के अनुसार, एनसीटीई पाठ्यक्रमों में प्रवेश में लिए विद्यार्थी 27 से 29 अगस्त तक ऑनलाइन पंजीयन/आवेदन कर सकेंगे। पंजीकृत आवेदनों के दस्तावेजों का सत्यापन 27 से 30 अगस्त तक होगा। प्रवेश के लिये मेरिट सूची का प्रकाशन 1 सितंबर को होगा। विद्यार्थियों के लिए 2 सितंबर को सीट आवंटन जारी किया जाएगा। आवंटित हेल्प सेंटर पर मूल दस्तावेजों (टीसी, माइग्रेशन) के साथ भौतिक सत्यापन के लिए विद्यार्थियों को उपस्थित होकर 2 से 4 सितंबर तक लिंक इनिशिएट कराना होगा। विद्यार्थियों को आवंटित महाविद्यालय में प्रवेश शुल्क का भुगतान 2 से 6 सितंबर तक करना होगा।

जीतू के बिगड़े बोल

सबसे ज्यादा शराब मप्र की महिलाएं पीती हैं

●सीएम डॉ. मोहन का पलटवार- ये बहनों का अपमान, कांग्रेस अध्यक्ष माफी मांगें

भोपाल (नप्र)। मप्र कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि महिलाएं सबसे ज्यादा शराब, अगर पूरे देश में कहीं पीती हैं तो मप्र की पीती हैं। मप्र को यह तमगा मिला है। यह समृद्ध मप्र का सपना देखने वाली बीजेपी ने प्रदेश के हालात कर दिए हैं। देश में शराब का सबसे ज्यादा खपत कहीं हैं तो मप्र में है। पटवारी सोमवार को भोपाल में अपने आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे थे। उन्होंने राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे और सरकारी रिपोर्ट का हवाला देते हुए यह बात कही। पटवारी के बयान पर भाजपा हमलावर है। सीएम डॉ. मोहन यादव ने इसे बहनों का अपमान बताया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष माफी मांगें। बीजेपी की महिला मोर्चा भी बोर्ड ऑफिस चौराहे पर जीतू पटवारी और राहुल गांधी का पुतला दहन करेगी।

सीएम बोले- पटवारी माफी मांगें

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी के बयान पर सीएम डॉ. मोहन यादव ने पलटवार करते हुए कहा, मप्र सरकार लाड़ली बहनों के लिए लगातार काम कर रही है। 50 प्रतिशत आबादी के लिए पूर्ववर्ती सरकार द्वारा कई योजनाएं भी चलाई गई थी।

प्रधानमंत्री जी तो 33 प्रतिशत अलग से आरक्षण देकर लोकसभा विधानसभा में भी जोड़ रहे हैं। सीएम ने कहा- कांग्रेस की सरकार ने न कभी आरक्षण दिया। न कभी बहनों को तवज्जो दी। न कभी लाड़ली लक्ष्मी से लेकर लाड़ली बहना जैसी कोई योजना चलाई। उल्टे कांग्रेस के द्वारा बहनों को शराबी कहना ये सारी बहनों आधी आबादी का अपमान है। सीएम ने कहा-बहनों की जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर कोई बात कही जाए, लेकिन कांग्रेस के लोग कभी लाड़ली बहनों को बोरे में भरकर पटकने की बात करते हैं। कभी लाड़ली बहनों के संबंध में शराबी होने की बात करते हैं। ये बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।

बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष खंडेलवाल ने कहा- राहुल के कृपा पात्र ने बहनों का अपमान किया

पटवारी के बयान पर बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने एक्स पर लिखा- मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और राहुल गांधी के प्रिय कृपा पात्र जीतू पटवारी द्वारा प्रदेश की मातृ शक्ति को शराबी कहकर उन्हें अपमानित करने के शर्मनाक बयान की जितने कड़े शब्दों में निंदा की जाए कम है। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने आगे लिखा- आज जब देशभर में करोड़ों बहनें सात्विक श्रद्धा से निराहार रहकर हरतालिका तीज का व्रत रख रही हैं, ऐसे पावन दिवस मातृ शक्ति के खिलाफ इस तरह के अभद्र और अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करना न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि करोड़ों महिलाओं की आस्था का भी घोर अपमान है।

महिलाओं से माफी मांगें पटवारी

खंडेलवाल ने कहा- मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा सरकार लाड़ली बहनों को सम्मान पूर्वक आर्थिक सहायता उपलब्ध करा रही है, इसलिए चिढ़ी कांग्रेस अब बौखलाई हुई है। मातृ शक्ति के खिलाफ अमर्यादित बयान के लिए जीतू पटवारी महिलाओं से माफी मांगें। जीतू पटवारी के इस बयान पर बीजेपी की महिला मोर्चा बोर्ड ऑफिस पर जीतू पटवारी और राहुल गांधी का पुतला दहन करेगी।

बरगी डैम के 9, तवा बांध के 3 गेट खुले

रतलाम में तेज बारिश, चौराहों पर पानी भरा, मंदसौर में शिवना उफान पर

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में इन दिनों मानसून टर्फ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम का असर है। मंगलवार सुबह जलस्तर बढ़ने की वजह से जबलपुर के बरगी बांध के 9 गेट खोल दिए गए। इनसे 1097 क्यूसेक पानी नर्मदा नदी में छोड़ा गया।

मंडला, नरसिंहपुर और नर्मदापुरम में नदी किनारे के गांवों में अलर्ट जारी किया गया है। नर्मदापुरम में तवा डैम के तीन गेट दो-दो फीट की ऊंचाई तक खोलकर 10 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। रतलाम में सुबह करीब साढ़े 7 बजे से एक घंटे तक तेज बारिश हुई। दो बत्ती, फ्री गंज चौराहे पर पानी भर गया। मंदसौर में शिवना नदी, नाहरगढ़ बिल्लोद पुलिया के ऊपर से बह रही है। भानपुरा में बड़ा महादेव स्थित झरना बहने लगा है।

नीमच और मंदसौर में भारी बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग के मुताबिक, आज उज्जैन संभाग के 2 जिले- नीमच और मंदसौर में भारी बारिश का अलर्ट है। भोपाल समेत अन्य जिलों में हल्की बारिश का दौर बना रहेगा। यहां यलो अलर्ट जारी किया गया है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि अगले 3 दिन के लिए कुछ जिलों में ही भारी बारिश की चेतावनी दी गई है। बाकी में हल्की बारिश होगी।

24 घंटे में 15 से ज्यादा जिलों में गिरा पानी

मध्यप्रदेश में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश का दौर जारी है। पिछले 24 घंटे के दौरान 15 से अधिक जिलों में बारिश हुई। भोपाल, मंदसौर, रतलाम, नर्मदापुरम, श्योपुर, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, छिंदवाड़ा, मंडला, सागर, सतना, बैतूल, दतिया, गुना और रायसेन में पानी गिरा।

जगदीशपुर में जब्त मेफेड्रोन में इस्तेमाल केमिकल अत्यंत खतरनाक

आपरेशन क्रिस्टल में शामिल अफसरों की आंखों में अब भी जलन, आरोपी जेल गए

भोपाल (नप्र)। डायरेक्टोरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस (डीआरआई) ने भोपाल में केमिकल युक्त अवैध दवा निर्माण के जिस कारखाने का भंडाफोड़ किया है वह इतना खतरनाक है कि इस केमिकल की जब्ती करने वाले डीआरआई के अफसरों की आंखों में अभी भी जलन है। ऐसे में डीआरआई अफसर प्रदेश में गोपनीय सूचना के आधार पर ऐसा करने वालों पर एक्शन लेने की तैयारी में हैं। दूसरी ओर भोपाल रेलवे स्टेशन पर हाइड्रोपोनिक वीड के साथ गिरफ्तार किए युवकों समेत पांच को रिमांड अवधि खत्म होने पर जेल भेजा है।

भोपाल के जगदीशपुर (इस्लामनगर) में 92 करोड़ की 61.2 किलोग्राम मेफेड्रोन पिछले हफ्ते जब्त की गई और इसमें सात आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। ऑपरेशन क्रिस्टल ब्रेक के नाम से की इस कार्यवाही में डीआरआई ने सूरत और मुंबई पुलिस की भी मदद ली थी। आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजा जा चुका है। जिस केमिकल के साथ मेफेड्रोन ड्रग बनाने की तैयारी थी वह बहुत ही खतरनाक है।

मध्यप्रदेश सबसे बड़ा टमाटर उत्पादक राज्य

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश देश में सब्जी उत्पादन की दृष्टि से तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश में किसानों द्वारा 12 लाख 85 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सब्जियों का उत्पादन किया जा रहा है। इनमें सर्वाधिक उत्पादन टमाटर का है, उल्लेखनीय मध्यप्रदेश टमाटर के उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है। प्रदेश में 2024-25 में एक लाख 27 हजार 740 हैक्टर में टमाटर की खेती की गई है इसमे 36 लाख 94 हजार 702 मीट्रिक टन का उत्पादन संभावित है। विगत 4 वर्षों में प्रदेश में टमाटर के रकबे में 16,776 हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। वर्ष 21-22 में प्रदेश में 1,10,964 हेक्टेयर में किसानों द्वारा टमाटर की खेती की गई थी जो वर्ष 24-25 में बढ़कर 1 लाख 27 हजार 740 हेक्टेयर हो गया है, जो बाजार में टमाटर की मांग और प्रदेश के टमाटर की पहचान का ही परिणाम है। मध्यप्रदेश के टमाटर की महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ में बहुत माँग है। किसानों की मेहनत और सरकार की योजनाओं का परिणाम है कि टमाटर का उत्पादन सब्जियों में सर्वाधिक 28.92 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर है। प्रदेश में उद्यानिकी फसलों की औसत उत्पादकता 15.02 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर है। मध्यप्रदेश में उद्यानिकी फसलों का कुल रकबा 26 लाख 91 हजार हेक्टर में से प्रदेश में किसानों द्वारा 12 लाख 40 हजार हेक्टेयर में 245 लाख 98 मीट्रिक टन सब्जी का उत्पादन कर देश में तीसरे स्थान पर बना हुआ है। सब्जियों फसलों में टमाटर, धनिया और लहसुन के उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है। कुछ वर्षों से किसानों में टमाटर उत्पादन के प्रति आकर्षण बढ़ा है। राज्य सरकार भी टमाटर के बीज 50 प्रतिशत सब्सिडी दे रही है। टमाटर पर आधारित लघु उद्योगों की संख्या भी बड़ी है। पीएमएफएमई योजना से किसानों को फूड प्रोसेसिंग यूनिट लगना आसान हुआ है।

अनूपपुर जिले के किसानों ने टमाटर उत्पादन में रचा नया इतिहास

अनूपपुर जिले के 15 हजार किसानों ने टमाटर की खेती कर एक लाख 40 हजार मीट्रिक टन टमाटर की रिकॉर्ड पैदावार की है। जिले के तीन प्रमुख क्लस्टर जैतहरी, अनूपपुर और पुष्पराजगढ़ में टमाटर की खेती व्यापक रूप से की जा रही है। इससे लगभग 15,500 किसान प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हो रहे हैं। जिले में हाइब्रिड एवं स्थानीय किस्मों के टमाटर की खेती की जा रही है। राज्य सरकार द्वारा बीज ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति पर 50-50 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जा रहा है। इससे किसानों की लागत कम और उत्पादन के साथ आय बेहतर हुई है।

संस्कृति, परंपरा, संवेदना और विचारों को आगामी पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं साहित्यकार : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

विंध्य क्षेत्र के साहित्यकारों का किया सम्मान

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि साहित्य समाज का आईना होता है। साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से संस्कृति, परंपरा, संवेदना और विचारों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाते हैं। विंध्य की यह गौरवशाली परंपरा है कि यहां के साहित्यकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त करना न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि है बल्कि विंध्य की साहित्यिक धरती की सामूहिक उपलब्धि है। यह गौरव पूरे प्रदेश का है और साहित्यकारों के इस योगदान को सदैव याद रखा जाएगा।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विंध्य क्षेत्र के वरिष्ठ साहित्यकारों को मंत्रालय भोपाल में सम्मानित किया। उन्होंने डॉ. चंद्रिका प्रसाद चंद्र, डॉ. ओमप्रकाश मिश्र 'व्यथित' एवं डॉ. विवेक द्विवेदी का शॉल और श्रीफल प्रदान कर अभिनंदन किया। उल्लेखनीय है कि विंध्य क्षेत्र के 6 साहित्यकार/लेखकों को प्रतिष्ठित मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पहला अवसर है जब विंध्य क्षेत्र के 6 लेखकों को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इनमें से 4 लेखक रीवा के निवासी हैं। डॉ. चंद्रिका प्रसाद चंद्र को

'रिश्तन केर निबाह' बघेली कहानी संकलन के लिए विश्वनाथ सिंह जूदेव साहित्य एकेडमी पुरस्कार वर्ष-2023 से सम्मानित किया गया है। डॉ. चंद्र ने 8 निबंध संग्रह, 1 कविता संग्रह और 2 बघेली कहानी संकलन की रचना की है। डॉ. ओमप्रकाश मिश्र 'व्यथित' को 'मेरा परिचय-मेरी कविता' गीत संग्रह के लिए वर्ष-2023 का वीरेन्द्र कुमार मिश्र साहित्य एकेडमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। डॉ. विवेक द्विवेदी को 'सुनो कावेरी' कहानी संकलन पर सुभद्रा कुमारी चौहान साहित्य एकेडमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। डॉ. द्विवेदी ने 9 उपन्यास और 10 कहानी संग्रह लिखे हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. प्रमोद जैन को लघु कथा संग्रह 'सेल्फी' पर जैनेन्द्र कुमार पुरस्कार और मैहर निवासी श्री सीताशरण गुप्त को बघेली कविता संग्रह 'जगन्नाथ केर प्रसाद' के लिए वर्ष-2022 का विश्वनाथ सिंह जूदेव साहित्य एकेडमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। बाल साहित्य पर श्री पाणि पंकज पांडे को वर्ष-2022 का हरिकृष्ण देवसरे मध्यप्रदेश साहित्य एकेडमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

केश शिल्पी आयोग के पूर्व अध्यक्ष नंद किशोर वर्मा के निधन पर शोक व्यक्त

भोपाल (नप्र)। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने मध्यप्रदेश केश शिल्पी आयोग के पूर्व अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त श्री नंद किशोर वर्मा के निधन पर शोक व्यक्त किया है। आयुक्त श्री भोंडवे की ओर से विभाग के उप संचालक श्री बी.डी. भूमरकर तथा केश शिल्पी आयोग के कार्यालय प्रबंधक श्री देवेंद्र बारसकर ने धार जिले के पीथमपुर में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में पहुँचकर श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यालय के अधिकारियों ने आयुक्त श्री भोंडवे द्वारा प्रेषित श्रद्धांजलि संदेश का वाचन किया। संदेश में कहा गया कि स्व. श्री वर्मा ने जीवन भर समाज सेवा एवं केश शिल्पियों के उत्थान के लिए समर्पित भाव से कार्य किया। उनके कार्यों की छाप समाज में लंबे समय तक बनी रहेगी।

कार्यक्रम के दौरान विभाग की ओर से स्व. श्री वर्मा के परिजनों को चिकित्सा प्रतिपूर्ति एवं मानदेय की राशि का चेक भी सौंपा गया। उल्लेखनीय है कि श्री नंद किशोर वर्मा का निधन 14 अगस्त 2025 को 70 वर्ष की आयु में हुआ था।

संपादकीय

दिव्यांगों के हक में फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने देश में दिव्यांगों का मजाक उड़ाने वाले कॉमेडियनों को माफी मांगने तथा इसका वीडियो सोशल मीडिया पर डालने का फैसला सुनाकर दिव्यांगों की गरिमा की रक्षा की है। कोर्ट ने यह निर्देश समय रैना और अन्य यूट्यूब चैनलों को दिया। कोर्ट ने उनको अपने सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और यूट्यूब चैनलों पर साफ़ माफ़ी दिखाने का आदेश दिया है। अदालत ने कहा कि विकलांग लोगों का मजाक उड़ाने पर सोशल मीडिया के इंफ्लूएंसरों पर जुर्माना भी लगाया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट फैसले में साफ कहा कि जब आप भाषण को कॉमर्शियलाइज कर रहे हैं, तो आप किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचा सकते। कोर्ट ने समय रैना और कई अन्य हास्य कलाकारों को विकलांग व्यक्तियों का मजाक उड़ाने वाले चुटकुलों के लिए फटकार लगाई। इसने कहा कि विकलांग व्यक्तियों का मजाक उड़ाना मानवाधिकारों का उल्लंघन है और समाज में संवेदनशीलता की कमी को दिखाता है। जस्टिस सूर्य कांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि अपराध से ज़्यादा पश्चाताप होना चाहिए। कोर्ट ने माफ़ी के अलावा दंड और मुआवजे पर बाद में फ़ैसला लेने का संकेत दिया और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को पक्षकार बनाने की याचिका स्वीकार कर ली। गौरतलब है कि यह फ़ैसला एसएमए क्योर फाउंडेशन द्वारा दायर याचिका पर आया है, जिसमें समय रैना, विपुन गोयल, बलराज परमजीत सिंह घई, सोनाली ठक्कर उर्फ सोनाली, आदित्य देसाई और निशांत जगदीश तंवर द्वारा विकलांगों का मजाक उड़ाने वाले वीडियो को चिह्नित किया गया था। संगठन ने विकलांगों का मजाक उड़ाने से रोकने के लिए दिशा निर्देश जारी करने की भी मांग की थी। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने मामले को गंभीरता से लेते हुए कहा कि इस तरह की सामग्री न केवल प्रभावित व्यक्तियों को मानसिक आघात पहुँचाती है, बल्कि समाज में पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देती है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दूसरे समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाले व्यावसायिक भाषणों पर लागू नहीं हो सकता है। यह मामला हाल ही में वायरल हुए 'इंडियाज गॉट लेटेंट' विवाद से जुड़ा है, जिसमें इन कॉमेडियनों ने अपने पॉडकास्ट और यूट्यूब वीडियो में विकलांग व्यक्तियों की नकल करके हास्य का प्रयास किया था। याचिका में आरोप लगाया गया कि ये मजाक विकलांग व्यक्तियों की गरिमा का अपमान करते हैं और मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हैं। स्पाइनल मस्कुलर एट्रॉफी जैसी बीमारियों से प्रभावित लोगों के लिए काम करने वाले एसएमए क्योर फाउंडेशन ने तर्क दिया कि इस तरह की सामग्री सोशल मीडिया पर बेतहाशा फैल रही है, जो पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देती है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला न केवल इन कॉमेडियनों को माफी मांगने के लिए बाध्य करता है, बल्कि समाज को संवेदनशीलता सिखाता है। जबकि हास्य की स्वतंत्रता बरकरार रहेगी, लेकिन यह दूसरों की गरिमा पर नहीं हो सकती। कोर्ट ने अगली सुनवाई के लिए तारीख तय की है, जहां दंड और दिशा निर्देशों पर अंतिम फैसला होगा। इस फैसले का अर्थ यह नहीं कि सुप्रीम कोर्ट ने अभिव्यक्ति की आजादी पर कोई अंकुश लगाया है। क्योंकि दूसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट ने ही एक अन्य फैसले में अशोका यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद के खिलाफ 'ऑपरेशन सिंदूर' पर सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर दायर चार्जशीट पर कार्यवाही रोक कर दूसरी एफआईआर रद्द कर दी। कोर्ट ने जिस एफआईआर को रद्द किया है, उसमें पुलिस ने क्लोज़र रिपोर्ट दी थी। प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद को 18 मई 2025 को हरियाणा पुलिस ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर उनके सोशल मीडिया पोस्ट के लिए गिरफ्तार किया था। इन पोस्ट में उन्होंने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले और भारत की सैन्य कार्रवाई पर टिप्पणी की थी।

बारूद के ढेर पर बैठी ये दुनिया

पूरी दुनिया 'अलास्का शिखर सम्मेलन' के नतीजों का इंतज़ार कर रही थी और उम्मीद कर रही थी कि 3 साल से ज़्यादा समय से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध को रोका जा सकेगा। साथ ही, उन्हें उम्मीद थी कि दुनिया को एक संभावित महायुद्ध, परमाणु युद्ध से बचाया जा सकेगा। हालांकि अलास्का में दुनिया की उम्मीदों के मुताबिक नतीजे नहीं मिले, लेकिन यह कहा जा सकता है कि इस वार्ता ने रूस और यूक्रेन के बीच अगले 'शिखर सम्मेलन' और शांति वार्ता का मार्ग प्रशस्त किया है और रूस, यूक्रेन के बीच शांति संधि पर सहमत होने के लिए अनुकूल माहौल बनाया है।

नजरिया

रमाकांत नाथ
लेखक ओडिशा के वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच 'अलास्का शिखर सम्मेलन' हो गया है। कई लोग कहने लगे हैं कि इस बैठक का नतीजा कुछ भी नहीं निकला। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शब्दों से यह स्पष्ट हो गया है कि वे 'शिखर सम्मेलन' में किसी नतीजे की उम्मीद लेकर नहीं आए थे। तो यह 'शिखर सम्मेलन' क्यों आयोजित किया गया, जिससे कोई नतीजा नहीं निकल सका या रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने का कोई समाधान नहीं निकल सका?

पूरी दुनिया 'अलास्का शिखर सम्मेलन' के नतीजों का इंतज़ार कर रही थी और उम्मीद कर रही थी कि 3 साल से ज़्यादा समय से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध को रोका जा सकेगा। साथ ही, उन्हें उम्मीद थी कि दुनिया को एक संभावित महायुद्ध, परमाणु युद्ध से बचाया जा सकेगा। हालांकि अलास्का में दुनिया की उम्मीदों के मुताबिक नतीजे नहीं मिले, लेकिन यह कहा जा सकता है कि इस वार्ता ने रूस और यूक्रेन के बीच अगले 'शिखर सम्मेलन' और शांति वार्ता का मार्ग प्रशस्त किया है और रूस, यूक्रेन के बीच शांति संधि पर सहमत होने के लिए अनुकूल माहौल बनाया है।

अगर हम इसे दूसरे नजरिए से देखें, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि अलास्का वार्ता विश्व में शांति स्थापित करने, रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने, संभावित विश्वयुद्ध को रोकने, संभावित परमाणु युद्ध के प्रभावों से दुनिया को बचाने जैसे मुद्दों पर नहीं थी। दुनिया की दो महाशक्तियां, अमेरिका और रूस, लंबे समय के बाद आमने-सामने आईं और एक-दूसरे का अध्ययन किया। अप्रत्यक्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि अपने-अपने साम्राज्यों की सुरक्षा और विस्तार तथा दोनों विश्व नेताओं की तानाशाही और विश्व विजेता बनने की चाहत उन्हें अलास्का खींच लाई थी।

'अमेरिका को फिर से महान बनाने' (मागा) के नारे के साथ दूसरी बार सत्ता में आए ट्रंप को इस बात का अहसास नहीं था कि जिस तरह फीनिक्स पक्षी अपनी राख से उठ खड़ा होता है, उसी तरह पुतिन रूस को फिर से दुनिया की एक महान शक्ति बनाना चाहते हैं और यूक्रेन समेत उसके सभी विभाजित 14 क्षेत्रों को एकजुट करना चाहते हैं। अलास्का वार्ता के बाद स्पष्ट हो गया है कि अमेरिका के प्रभाव, उकसावे, प्रतिक्रिया और व्यापार शुल्कों की धमकियों के तहत दुनिया में शांति स्थापित करना संभव नहीं होगा। वैसे भी ट्रम्प अपनी 'नोबेल पुरस्कार' की जिद के कारण पुतिन की बातों से सहमत होने के लिए मजबूर हो गए हैं।

दुनिया के दो प्रमुख नेताओं का एक साथ आना और विश्व शांति के लिए एक मसौदा तैयार करना महत्वपूर्ण घटना थी। तीन घंटे की बैठक के दौरान, रूसी राष्ट्रपति पुतिन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प से ज़्यादा प्रभावशाली दिखाई दिए। पुतिन 'शिखर सम्मेलन' से पहले रखी गई अपनी शर्तों पर अडिग रहे और राष्ट्रपति ट्रम्प पुतिन को प्रभावित नहीं कर पाए। बल्कि, ट्रंप को यह मानने पर मजबूर होना पड़ा कि रूस का अपनी सीमा सुरक्षा को लेकर चिंतित या सक्रिय होना गलत नहीं है। संक्षेप में, ट्रंप ने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदीमीर ज़ेलेंस्की को यह संदेश दे दिया है कि रूस एक महाशक्ति है। इसलिए उससे बहस करने की बजाय, उसकी बातों में आना या उसकी इच्छा के अनुसार काम करना बेहतर होगा। ट्रंप-पुतिन वार्ता के बाद, अमेरिकी राष्ट्रपति और रूसी राष्ट्रपति अगले महीने शांति वार्ता के लिए मास्को में फिर मिलेंगे। इस वार्ता में यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की के शामिल होने की भी संभावना है, लेकिन जब ज़ेलेंस्की पुतिन की शर्तें मानने को तैयार नहीं हैं, तो यह उम्मीद कम ही है कि ज़ेलेंस्की 'मास्को शिखर सम्मेलन' में रूस-यूक्रेन युद्ध का कोई समाधान निकालेंगे।

विश्व में युद्ध और आतंक के भय को बढ़ाने में यदि किसी का सबसे अधिक योगदान रहा है, तो वह अमेरिका ही है। यह आश्चर्यजनक है कि अमेरिका विश्व में शांति स्थापित करने के लिए आगे आया है। वियतनाम से लेकर, मध्य पूर्व में ईरान और इराक के बीच युद्ध, सोवियत संघ के प्रभाव को समाप्त करने और अफगानिस्तान में लोकतंत्र स्थापना के नाम पर नरसंहार, इराक के खनिज संसाधनों पर कब्जा करने के लिए सद्दाम हुसैन की हत्या, तानाशाही उन्मूलन की आड़ में अपनी तानाशाही महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति और हथियारों के व्यापार को बढ़ाने के लिए देशों के बीच संघर्ष, गृहयुद्ध आदि भड़काने में अमेरिका के योगदान को कोई नकार नहीं सकता। अमेरिका द्वारा भड़काई गई कई हिंसक घटनाओं, जैसे - गाजा, फिलिस्तीन में इजरायल द्वारा नरसंहार, ईरान में युद्ध, सीरिया में गृहयुद्ध आदि के बरक्स शांति का अग्रदूत बनना विश्व के लोगों के लिए अमेरिका का एक धोखा मात्र है।

इसी प्रकार, सोवियत संघ और बाद में रूस द्वारा विश्व मंच पर अपना प्रभाव बढ़ाने के प्रयासों ने भी अनेक युद्धों और गृहयुद्धों का सामना कराया है। दो वैश्विक शक्तियों, अमेरिका और रूस के बीच तीसरी शक्ति के रूप में चीन के उदय और एशिया सहित संपूर्ण विश्व के व्यापार पर एकाधिकार की चाहत ने आर्थिक असंतुलन को जन्म दिया है। अमेरिका बनाम रूस-चीन, अमेरिका-चीन बनाम रूस, अमेरिका-रूस बनाम चीन का समीकरण बन जाएगा, यह कहना संभव नहीं है। यह असंभव नहीं है कि इन तीनों शक्तियों के संघर्ष के बीच विश्व के राष्ट्र दो या तीन गुटों में बंट जाएँ। भारत एक समय अपनी 'गुटनिरपेक्ष नीति' के माध्यम से 'तीसरी शक्ति' के रूप में उभरा था। आज, जब गुटनिरपेक्ष सोच समाप्त हो चुकी है, तो यह विश्व शांति स्थापित करने और महाशक्तियों के प्रभाव से बचने का एक विकल्प हो सकता है। भारत को इसी सोच के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है, लेकिन भारत की वर्तमान विदेश नीति और विश्व के साथ संबंधों ने उसे उसकी महान सोच से दूर कर दिया है।

फरवरी 2022 में शुरु हुए रूस-यूक्रेन युद्ध में अब तक यूक्रेन के लगभग 50,000 लोग मारे जा चुके हैं, जबकि रूस में मरने वालों की संख्या 15,000 से अधिक है। अब तक, यूक्रेन से लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं और कई घायल हुए हैं। रूसी सेना ने यूक्रेन के लगभग 20 प्रतिशत भू-भाग पर नियंत्रण कर लिया है, जबकि रूस यूक्रेन से औद्योगिक रूप से समृद्ध डोनेट्स्क क्षेत्र को छीनने की कोशिश कर रहा है। अगर इस युद्ध को नहीं रोका गया, तो यह विश्वयुद्ध में बदल सकता है और पूरी मानव सभ्यता के लिए एक भयानक आपदा बन सकता है। जिस तरह जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहर परमाणु बम विस्फोट में लोगों से खाली हो गए थे, उसी तरह यह कहना संभव है कि दुनिया के परमाणु-अस्त्र संपन्न देश अपनी शक्ति से पृथ्वी को बार-बार नष्ट कर सकते हैं। ऐसी तबाही से पहले, दुनिया को इन शक्तियों के हाथों से बचाना होगा। यह केवल विश्व नेताओं के बीच शांति वार्ता से संभव नहीं होगा। जब विश्व में शांति बनाए रखने और राष्ट्रों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए गठित 'संयुक्त राष्ट्र संघ' निष्क्रिय हो गया है, तो विश्व के लोगों को विश्व को बचाने के लिए आगे आना चाहिए। (सप्रेस)

विभाजन की अपूर्ण कथा और इतिहास की चुनिंदा प्रस्तुति

दूसरा पहलू

अरुण कुमार डनायक
लेखक गांधी विचारों के अध्येता हैं।

दैनिक सुबह सवेरे में प्रकाशित प्रमोद भार्गव का आलेख 'देश विभाजन के दोषी कौन' इस बात पर ज़ोर देता है कि आज़ादी के साथ-साथ आई यह त्रासदी भारतीय समाज और राजनीति के लिए स्थायी घाव छोड़ गई। किंतु इस आलेख और हाल में प्रकाशित एनसीईआरटी के विभाजन की भयावहता - मध्य चरण मॉड्यूल को पढ़ने पर स्पष्ट होता है कि विभाजन की कहानी को पूरी गंभीरता और निष्पक्षता से प्रस्तुत नहीं किया गया है। ये दोनों प्रस्तुतियाँ कुछ पहलुओं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने और अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को बहुत ही चतुराई से छिपाने का प्रयास हैं।

सबसे बड़ी कमी यह है कि पाठ्यक्रम में हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका का कोई उल्लेख नहीं है। इतिहासकारों ने बार-बार प्रमाणित किया है कि 1937 से ही सावरकर और हिंदू महासभा ने 'दो राष्ट्र सिद्धांत' का समर्थन किया, और आरएसएस ने सांप्रदायिक राष्ट्रवाद को हवा दी। बंगाल और सिंध में मुस्लिम लीग के साथ मिलकर प्रांतीय सरकारें चलाईं। सिंध प्रांतीय सभा द्वारा पारित भारत विभाजन प्रस्ताव पर हिंदू महासभा ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। अंग्रेज़ों भारत छोड़ो आंदोलन से इन दोनों संगठनों ने दूरी बना ली, जिससे मुस्लिम लीग को अपनी जड़ें और गहरी करने का अवसर मिला। इन संगठनों की चुप्पी और उनकी वैचारिक स्थिति ने विभाजन की जमीन तैयार करने में योगदान दिया। लेकिन मॉड्यूल इन्हें पूरी तरह चर्चा से बाहर रखता है, जिससे इतिहास अधूरा रह जाता है।

दूसरा पक्ष है नेहरू और पटेल की भूमिका का असमान चित्रण। नेहरू को विभाजन स्वीकार करने वाले नेता के रूप में बार-बार रेखांकित किया गया है, जबकि पटेल को केवल मजबूरी में विभाजन स्वीकारने वाला दिखाया गया है। वास्तव में, दिसंबर 1946 में सबसे पहले पटेल के मन में ही यह विचार आया कि मुस्लिम लीगियों के साथ न केवल सरकार चलाना असंभव है, बल्कि देश की प्रगति भी नहीं हो सकेगी। कांग्रेस कार्य समिति और महासमिति की बैठकों में पटेल के वक्तव्यों को न बताकर पाठ्यक्रम ने संतुलन खो दिया है।

अंग्रेज़ों की ज़िम्मेदारी को भी मॉड्यूल हल्के ढंग से प्रस्तुत करता है। वायसराय वेवेल और माउंटबेटन के उद्धरणों में वे खुद को निर्दोष बताते हैं, जबकि हकीकत यह थी कि ब्रिटिश सत्ता ने लंबे समय तक 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। वेवेल की निष्क्रियता के कारण ही कलकत्ता के दंगे नहीं रोके जा सके और गांधीजी ने उनकी विदाई की मांग की थी। वहीं माउंटबेटन की जल्दबाजी ने लाखों निर्दोषों को मौत और विस्थापन की आग में झोंक दिया। वस्तुतः विभाजन की पूरी योजना लंदन दौरे के दौरान माउंटबेटन ने तैयार की थी और इसे मई 1947 में सबसे पहले नेहरू को दिखाया था। इसे देखकर नेहरू जी अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाए थे। इस पहलू को गंभीरता से न दिखाना एक बड़ी चूक है।

महात्मा गांधी के विभाजन-विरोधी विचारों को केवल औपचारिक उल्लेख तक सीमित कर दिया गया है। जबकि गांधी बार-बार कहते रहे कि विभाजन 'उनके लिए अंग-भंग जैसा होगा' और अंत तक वे सांप्रदायिक सौहार्द्र की रक्षा के लिए प्रयासरत रहे। प्यारेलाल की पूर्णाहुति और कृपलानी की गांधी जीवन और विचार में विस्तार से दर्ज है कि गांधी किस तरह जिन्ना के साथ समझौते की संभावनाएँ तलाशते रहे। अप्रैल 1947 के प्रथम सप्ताह में उन्होंने वायसराय माउंटबेटन को नौ सूत्रीय सुझाव दिए। इसमें जिन्ना को मंत्रिमंडल गठन की छूट और पाकिस्तान की मांग को हिंसा नहीं बल्कि तर्क से सिद्ध करने की शर्त रखी। माउंटबेटन सहमत थे, पर उनके सलाहकारों ने इरविन-पैक्ट जैसी गलती की आशंका में विरोध किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने कांग्रेस नेतृत्व में मतभेद भी गहरा दिए। कांग्रेस कार्यसमिति ने गांधीजी की योजना ठुकरा दी और विभाजन को 'हार' कहने वाली उनकी चेतावनी भी नहीं मानी। परंतु मॉड्यूल में गांधी की यह नैतिक चेतावनी लगभग नज़रअंदाज़ कर दी गई है।

14 जून को कांग्रेस महासमिति की बैठक में गांधीजी ने कहा कि कार्यसमिति के निर्णय को अस्वीकार करना उचित नहीं होगा, क्योंकि ऐसा करने पर पूरी कार्यसमिति को इस्तीफा देना पड़ेगा और नई कार्यसमिति का गठन करना होगा। यदि विरोधी सदस्य इन जिम्मेदारियों को उठाने को तैयार हों तो वे निर्णय अस्वीकार कर सकते हैं, लेकिन कोई आगे नहीं आया। मतदान में 157 सदस्य पक्ष में और 15 विरोध में रहे। इस प्रकार कांग्रेस ने विभाजन दुखी मन से स्वीकार किया। बाद में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने माना कि अंतरिम सरकार के अनुभव और मुस्लिम लीग की अड़ंगेबाज़ी ने परिस्थितियाँ बदल दीं। लीग के मंत्री यहाँ तक कि दंगे शांत करने के प्रयासों में भी बाधा डालते रहे। वस्तुतः देश का जनमत विभाजन के पक्ष में था और गांधीजी को भी इसका अहसासहो गया था।

मॉड्यूल का निष्कर्ष कहता है कि किसी धर्म को विशेषाधिकार न दिया जाए, राजनीति में कट्टरता और हिंसा का स्थान न हो और इतिहास को न तो सफेदपोश बनाया जाए और न अतिरंजित। लेकिन यही बातें वर्तमान शासन की नीतियों में नहीं दिखाई देतीं। आज धर्म आधारित ध्रुवीकरण की राजनीति तेज है, इतिहास को चुनिंदा दृष्टिकोण से गढ़ा जा रहा है और विभाजन की स्मृति को राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त मॉड्यूल यह दावा भ्रामक है कि बहुत से लोगों को विभाजन का इतिहास मालूम ही नहीं। और यदि शिक्षकों को भी यह सब विस्तार से ज्ञात नहीं है, तो इसकी जिम्मेदारी किसकी है ? साहित्य, सिनेमा और शोध में इस पर व्यापक काम हुआ है। यह कहना कि लोग नहीं जानते, दरअसल नई पीढ़ी को विशेष दृष्टिकोण से इतिहास पढ़ाने का बहाना है।

मुस्लिम लीग की जिद, अंग्रेज़ की चालबाजी तथा दोनों समुदायों के बीच गहरे अविश्वास को विभाजन का कारण मानने वाले राममनोहर लोहिया के अनुसार, विभाजन केवल सत्ता का सौदा नहीं था, बल्कि समाज की चेतना पर चोट थी; एनसीईआरटी मॉड्यूल इसमें जनता, स्त्रियाँ, किसान और मुस्लिम-सिंधी समाज की पीड़ा को पर्याप्त रूप से नहीं दिखाता।

एनसीईआरटी मॉड्यूल और प्रमोद भार्गव का आलेख इतिहास को चुनिंदा तथ्यों और राजनीतिक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। विभाजन का सबक नई पीढ़ी तक पहुँचाना हो तो पाठ्यक्रम संतुलित और सच्चा होना चाहिए। गांधीजी की चेतावनी याद दिलाती है कि सांप्रदायिकता और हिंसा राष्ट्र को मजबूत नहीं बनाती; असली शक्ति विविधता में एकता और आपसी विश्वास में है।

मनुष्य में देवत्व की प्रतिष्ठा की क्षमा भावना

क्षमापना दिवस विशेष

संदीप सृजन
लेखक स्तंभकार हैं।

भारत की गौरवशाली वांग्मय परम्परा के प्रमुख दर्शन जैन दर्शन और वैदिक दर्शन, दोनों ही भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के प्रमुख स्तंभ हैं, जो क्षमा को आत्म-उन्नति का माध्यम मानते हैं। जैन दर्शन में क्षमा अहिंसा का अभिन्न अंग है, जबकि वैदिक दर्शन में यह धर्म और मोक्ष का आधार है। क्षमा भावना मनुष्य में देवत्व का प्रतिष्ठा करती है यह कथन मानव जीवन की गहन सत्यता को उजागर करता है। क्षमा, जो क्रोध, द्वेष और प्रतिशोध की जंजीरों से मुक्त करती है, मनुष्य को उसकी आंतरिक दिव्यता की ओर ले जाती है। क्षमा कोई कमजोरी नहीं, बल्कि शक्ति का प्रतीक है। जैन और वैदिक ग्रंथों में क्षमा को आत्म-शुद्धि का साधन माना गया है। जैन दर्शन में यह कर्म-बंधन से मुक्ति का मार्ग है, जबकि वैदिक परंपरा में यह ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति का माध्यम।

जैन दर्शन, जो अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद पर आधारित है। क्षमा यहां अहिंसा का विस्तार है। जैन ग्रंथों जैसे 'उत्तराध्ययन सूत्र' और 'तत्वार्थ सूत्र' में क्षमा को 'क्षांति' कहा गया है, क्षांति का अर्थ है सहनशीलता और क्षमा। जैन मतानुसार, मनुष्य का जीवन कर्मों से बंधा है। क्रोध और द्वेष जैसे विकार नए कर्मों को आकर्षित करते हैं, जो आत्मा को जन्म-मरण के चक्र में बांधते हैं। क्षमा इन विकारों को नष्ट करती है, और आत्मा को कैवल्य (मोक्ष) की ओर ले जाती है। जैन दर्शन में क्षमा को 'सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र' के त्रिरत्नों के अंतर्गत रखा गया है। उदाहरणस्वरूप, महावीर स्वामी ने अपने जीवन में अनेक कष्ट सहे, लेकिन कभी प्रतिशोध नहीं लिया। जब एक सर्प ने उन्हें डसा, तो उन्होंने क्षमा भाव से कहा, यह इसका कर्म है। यह घटना दर्शाती है कि क्षमा मनुष्य को देवत्व प्रदान करती है, क्योंकि देवता क्रोध से मुक्त होते हैं। जैन साहित्य में 'प्रतिक्रमण' अनुष्ठान है, जिसमें व्यक्ति अपने पापों के लिए क्षमा मांगता है। यह अनुष्ठान आत्म-शुद्धि का माध्यम है। जैन दर्शन क्षमा को चार प्रकारों में वर्गीकृत करता है: क्रोध न करना, क्रोध होने पर उसे नियंत्रित करना, अपराधी को क्षमा करना, और स्वयं को क्षमा करना। 'आचारांग सूत्र' में वर्णित है कि क्षमा से जीव अहिंसा का पालन करता है, जो सभी जीवों के प्रति समानता का भाव जगाता है। क्षमा जैन दर्शन में सामाजिक सद्भाव का भी साधन है। जैन समाज में क्षमा के माध्यम से संघर्षों का समाधान किया जाता है। उदाहरण के लिए, जैन मुनि कभी विवाद में नहीं पड़ते; वे क्षमा भाव अपनाते हैं। यह दर्शन बताता है कि मनुष्य जन्म से देव नहीं होता, लेकिन क्षमा जैसे गुणों से देवत्व अर्जित कर सकता है। जैन दर्शन की यह शिक्षा आज के संघर्षपूर्ण विश्व में प्रासंगिक है, जहां क्षमा शांति का मार्ग प्रशस्त करती है।

वैदिक दर्शन, जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों और स्मृतियों पर आधारित है, क्षमा को 'क्षमा' या 'तितिक्षा' के रूप में वर्णित करता है। ऋग्वेद में कहा गया है: क्षमां भूमि क्षमां जलं, क्षमां वायुः क्षमां आकाशं अर्थात क्षमा पृथ्वी, जल, वायु और आकाश की तरह अनंत है। वैदिक मतानुसार, मनुष्य ब्रह्म का अंश है, लेकिन माया और अविद्या से ढका हुआ। क्षमा इन आवरणों को हटाती है, और आत्मा को ब्रह्म से एकाकार करती है, जो देवत्व है। वैदिक दर्शन में क्षमा को धर्म का अभिन्न भाग माना गया है। मनुस्मृति में लिखा है: क्षमा धर्म का मूल है। क्षमा से मनुष्य अपने विकारों पर विजय प्राप्त करता है, और देवत्व की ओर बढ़ता है। उपनिषदों में, जैसे बृहदारण्यक उपनिषद में, क्षमा को 'तप' का रूप कहा गया है। वैदिक दर्शन में क्षमा 'कर्म योग' का भाग है, जहां कर्म फल की अपेक्षा न करके क्षमा की जाती है। यह भावना मनुष्य को उसके अहंकार से मुक्त करती है, और ब्रह्म-ज्ञान प्रदान करती है।

जैन और वैदिक दर्शन दोनों ही क्षमा को आत्म-उन्नति का साधन मानते हैं, दोनों दर्शन क्षमा को विकार-नाशक मानते हैं। जैन के 'क्षांति' और वैदिक के 'तितिक्षा' समान हैं। दोनों में क्षमा मोक्ष का मार्ग है। क्षमा भावना मनुष्य में देवत्व की प्रतिष्ठा करती है, जैसा जैन और वैदिक दर्शन सिखाते हैं। जैन में यह अहिंसा का फल है, वैदिक में धर्म का। दोनों से प्रेरणा लेकर, हम क्षमा अपनाकर दिव्य जीवन जी सकते हैं। क्षमा से ही विश्व शांति संभव है। अंत में, क्षमा अपनाएं, देवत्व प्राप्त करें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्नी और बच्चा समय के तीन सर्वर

व्यंग्य

सचिन सिंह परिहार
लेखक राष्ट्रीय कराते खिलाड़ी हैं।

समय एक महाशक्ति है वह न रुकता है, न ठहरता है, न लौटता है। इतिहास ने इसे भूत, वर्तमान और भविष्य में बाँट दिया। परन्तु गृहस्थ ने इसे अपने घर के तीन अलग-अलग सर्वर में बाँट दिया पति का सर्वर भविष्य में अपलोड रहता है, पत्नी का सर्वर भूतकाल का बैकअप लिए बैठा है, और बच्चे का सर्वर वर्तमान में स्ट्रीमिंग कर रहा है।

पति भविष्य में जीता है। वह अपने जीवन का ब्लूप्रिंट अगले पचास साल तक खींच चुका है। उसकी नजरें हर वक्त प्लानिंग मोड में रहती हैं अगले महीने का बजट, अगले साल की ट्रिप, और रिटायरमेंट के बाद का इन्वेस्टमेंट। पत्नी पूछे आज दाल में नमक कम क्यों? तो वह कहे देखो, अगर अभी सोडियम कम रखेंगे तो भविष्य में बीपी कंट्रोल रहेगा, और मेडिकल बिल भी कम आएगा। उसका मन हमेशा अगर-तो के फार्मूले पर चलता है अगर बोनस आया तो नई कार, अगर महँगाई घटी तो घर का रिनोवेशन, अगर प्रमोशन मिला तो विदेश यात्रा। और अगर कुछ नहीं मिला तो अगली बार के लिए नया टारगेट। पत्नी भूतकाल में जीती है। उसके पास घर का पूरा डेटाबेस है पुराने वादों, अधूरे सपनों और भूले हुए सालगिरहों का। पति कहे अगले साल सोमनाथ चलेंगे, तो वह तुरंत 2018 का रिकॉर्ड खोलकर बता दे तब भी यही कहा था, और उज्जैन का टिकट कैंसिल कर दिया था। उसका भूतकाल भावनाओं का भी संग्रह है तुम अब पहले जैसे नहीं रहे, तुमने पहली बार गुलाब दिया था, फिर कभी फूल क्यों नहीं? पत्नी के पास पुराने स्क्रीनशॉट भी हैं, जिन्हें वह झगड़े के समय हथियार की तरह निकाल सकती है।

और बच्चा वह पूरी तरह वर्तमान में जीता है। उसे न कल की टेंशन है, न परसों का डर। उसका पूरा ब्रह्मांड इस पल की मैगी, इस क्षण का मोबाइल गेम, और अभी की इंस्टा स्टोरी में सिमटा है। उसे कहो कल बारिश होगी तो बोलेगा तो क्या? आज तो फ्री-फायर खेलना है। उसके लिए प्लान का मतलब है इंटरनेट का रिचार्ज और गेम के लेवल-अप की तैयारी। इस घर का समय-चक्र जैसे तिहरे रंग का चित्रपट है पति का तयशुदा संदेश, पत्नी की बीते दिनों की स्मृतियाँ, और बच्चे का इस क्षण का प्रत्यक्ष प्रसारण। जब तीनों एक साथ बैठते हैं, तो बहस का लाइव टेलीकास्ट ड्रॉइंग रूम में होता है पति बोले भविष्य उज्ज्वल है, पत्नी सुने भूतकाल अंधकारमय था, और बच्चा पूछे उज्ज्वल कौन है? नया क्लासमेट?

पति की दृष्टि गूगल मैप्स जैसी है दूर का रास्ता साफ दिखता है, पर पैर के पास पड़ा पत्थर भूल जाता है। पत्नी की स्मृति क्लाउड स्टोरेज जैसी है कुछ भी डिलीट नहीं होता, सब बैकअप रहता है। और बच्चा तो लाइव स्ट्रीम है अभी जो हो रहा है वही सच, बाकी सब बफरिंग। कभी-कभी यह तीनों टाइमलाइन आपस में टकरा जाती हैं। पति भविष्य की गगनचुंबी इमारत बना रहा होता है, पत्नी पुराने ईंटों का हिसाब रख रही होती है, और बच्चा इमारत की नींव पर स्केटबोर्ड चला रहा होता है। झगड़े में पति कहे तुम्हें दूरदृष्टि नहीं, पत्नी कहे तुम्हें स्मृति नहीं, और बच्चा कहे तुम दोनों के पास बैलेंस नहीं।

मुझे तो लगता है गृहस्थी का यह समय-संग्राम भी कुरुक्षेत्र के युद्ध से कम नहीं। यहाँ बाणों की जगह तर्क चलते हैं, और रथों की जगह सोफा-सेट। फर्क बस इतना है कि युद्ध में सेनाएँ अलग-अलग शिविरों में होती हैं, और यहाँ तीनों सेनाएँ एक ही वाई-फाई से जुड़ी हैं और विजेता वही होता है जिसके पास पासवर्ड हो। अधिकांश घरों में यह समय का महाकाव्य रोज खेला जाता है सुबह ब्रेकफास्ट टेबल पर, शाम टीवी के सामने, और रात सोने से पहले इंस्टा रील में। पति सपनों की फाइल सेव करता है, पत्नी पुराने रील फॉरवर्ड करती है, और बच्चा रिप्लाई ऑल में सिर्फ ओके लिखकर सो जाता है।

और इस तरह, भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों एक ही छत के नीचे रहते हुए भी, तीन अलग-अलग नेटवर्क पर सर्फ करते हैं। शायद यही गृहस्थी की सबसे बड़ी विडंबना है कि एक घर में समय कभी एक जैसा नहीं चलता, वह हमेशा तीन टैब में खुला रहता है और हर टैब पर अलग-अलग लोडिंग।

गणेश चतुर्थी पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बुद्धि, विवेक और समृद्धि के अधिष्ठाता हैं गणपति बप्पा

इस वर्ष यह त्योहार 27 अगस्त से शुरू होकर 8 सितंबर तक चलेगा। भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि का प्रारंभ 26 अगस्त को दोपहर 1 बजकर 54 मिनट पर होकर समापन 27 अगस्त की दोपहर 3 बजकर 44 मिनट पर होगा, इसीलिए उदया तिथि के अनुसार गणेश चतुर्थी का पर्व 27 अगस्त को मनाया जा रहा है। ज्योतिषियों के मुताबिक गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेश की मूर्ति स्थापना के लिए 27 अगस्त को सुबह 11 बजकर 5 मिनट से लेकर दोपहर 1 बजकर 40 मिनट तक का शुभ मुहूर्त रहेगा। वैदिक पंचांग के अनुसार 500 वर्ष बाद गणेश चतुर्थी पर इस बार पांच दुर्लभ संयोग बन रहे हैं, जिनमें सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि योग, प्रीति योग, इंद्र योग और ब्रह्म योग शामिल है।

भगवान गणेश की पूजा-अर्चना वैसे तो प्रतिदिन की जाती है लेकिन भाद्रपद महीना भगवान गणेश की उपासना के लिए अत्यंत शुभ माना गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि पर गणेश चतुर्थी मनाई जाती है। विभिन्न पौराणिक कथाओं के अनुसार भाद्रपद महीने में इसी चतुर्थी तिथि को भगवान गणेश का अवतरण हुआ था। यह पर्व 10 दिनों तक यानी अनंत चतुर्दशी तक मनाया जाता है और अनंत चतुर्दशी के दिन किसी पवित्र नदी अथवा घर में पानी के एक टब में गणपति बप्पा की मूर्ति का विसर्जन कर दिया जाता है। गणेश चतुर्थी का वैदिक ज्योतिष में विशेष महत्व है। इस वर्ष यह त्योहार 27 अगस्त से शुरू होकर 8 सितंबर तक चलेगा। भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि का प्रारंभ 26 अगस्त को दोपहर 1 बजकर 54 मिनट पर होकर समापन 27 अगस्त की दोपहर 3 बजकर 44 मिनट पर होगा, इसीलिए उदया तिथि के अनुसार गणेश चतुर्थी का पर्व 27 अगस्त को मनाया जा रहा है। ज्योतिषियों के मुताबिक गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेश की मूर्ति स्थापना के लिए 27 अगस्त को सुबह 11 बजकर 5 मिनट से लेकर दोपहर 1 बजकर 40 मिनट तक का शुभ मुहूर्त रहेगा। वैदिक पंचांग के अनुसार 500 वर्ष बाद गणेश चतुर्थी पर इस बार पांच दुर्लभ संयोग बन रहे हैं, जिनमें सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि योग, प्रीति योग, इंद्र योग और ब्रह्म योग शामिल है। ज्योतिषाचार्यों का मानना है कि गणेश चतुर्थी पर इन दुर्लभ योगों के बनने से कुछ राशियों की किस्मत चमक सकती है। गणेश चतुर्थी का दिन अपनी मनोकामनाएं पूरी करने की दृष्टि से बहुत शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन भगवान गणेश की श्रद्धापूर्वक पूजा करने से सभी विघ्न दूर हो जाते हैं और अपार सुख की प्राप्ति होती है। विघ्नहर्ता भगवान गणेश की पूजा भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से आरंभ होकर अनंत चतुर्दशी तक की जाती है, बड़े-बड़े पंडाल सजाये जाते हैं। घरों में भगवान गणेश की छोटी-बड़ी प्रतिमाओं के अलावा कई प्रमुख स्थानों पर भगवान गणेश की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं, जिनका लगातार अनंत चतुर्दशी तक पूजन किया जाता है।

गणपति विसर्जन को लेकर मान्यता है कि हमारा शरीर पंचतत्व से बना है और एक दिन उसी में विलीन हो जाएगा। इसी आधार पर अनंत चतुर्दशी के दिन गणपति विसर्जन किया जाता है। गणेश बुद्धि, समृद्धि और सौभाग्य के देवता हैं और मान्यता है कि गणेश चतुर्थी पर गणपति बप्पा की पूजा करने से वे भक्तों के सारे कष्ट हर लेते हैं। सच्चे मन से उनकी पूजा करने से शुभ-लाभ की प्राप्ति तथा समृद्धि के साथ धन-धान्य की वृद्धि होती है। भगवान गणेश की पूजा करने के लिए कई मंत्र हैं, जिनका उच्चारण करने से गणेश पूजा पूर्ण होती है और मान्यता है कि गणेश जी भी इन मंत्रों से जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं। ऐसे ही मंत्रों में से एक महामंत्र है-

वक्र तुंड
महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

अर्थात् घुमावदार सूंड वाले, विशाल शरीरकाय, करोड़ों सूर्य के समान महान प्रतिभाशाली। मेरे प्रभु, मेरे समस्त कार्य हमेशा बिना विघ्न के पूरे करने की कृपा करें। हिंदू धर्म में वैसे तो 33 करोड़ देवी-देवताओं की पूजा की जाती है लेकिन गणेश जी को सभी देवों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त है और प्रत्येक पूजा या कोई भी शुभ कार्य करने से पहले उनकी पूजा करने का विधान है। दरअसल उन्हें उनके पिता भगवान शिव ने ही यह विशेष वरदान दिया था कि हर पूजा या शुभ कार्य करने से पहले उनकी पूजा अनिवार्य होगी। रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा पीतवस्त्रधारी भगवान गणेश की पूजा सभी देवी-देवताओं में सबसे सरल मानी जाती है। भगवान गणेश के अनेक प्रचलित नामों में से गजानन, लम्बोदर, विघ्ननाशक, विनायक, गणाध्यक्ष, एकदन्त, चतुर्बाहु, गजकर्णक, भालचन्द्र, कपिल, विकट, धूम्रकेतु, सुमुख इत्यादि काफी प्रसिद्ध हैं।

शिव पुराण के अनुसार एक बार माता पार्वती ने स्नान से पूर्व अपने मैल से एक बालक उत्पन्न कर उसे अपना द्वारपाल बना दिया। जब पार्वती जी स्नान करने लगी, तब अचानक भगवान शिव वहां आए लेकिन द्वारपाल बने बालक ने उन्हें अंदर प्रवेश करने से रोक दिया। उसके बाद शिवगणों ने बालक से भयंकर युद्ध किया लेकिन कोई भी उसे पराजित नहीं कर सका तो क्रोधित शिव ने अपने त्रिशूल से बालक का सिर धड़ से अलग कर दिया। जब पार्वती को यह पता चला तो आग-बबूला हो उन्होंने प्रलय करने का निश्चय कर लिया। इससे देवलोक भयाक्रांत हो उठा और देवताओं ने उनकी स्तुति कर उन्हें शांत किया। भगवान शिव ने निर्देश दिया कि उत्तर दिशा में सबसे पहले जो भी प्राणी मिले, उसका सिर काटकर ले आएं। विष्णु उत्तर दिशा की ओर गए तो उन्हें सबसे पहले एक हाथी दिखाई दिया। वे उसी का सिर काटकर ले आए और शिव ने उसे बालक के धड़ पर रखकर उसे पुनर्जीवित कर दिया। पार्वती उसे पुनः जीवित देख बहुत खुश हुई और तब समस्त देवताओं ने बालक गणेश को अनेकानेक आशीर्वाद दिए। भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि कोई भी शुभ कार्य यदि गणेश की पूजा करके शुरू किया जाएगा तो वह निर्विघ्न सफल होगा। उन्होंने गणेश को अपने समस्त गणों का अध्यक्ष घोषित करते हुए आशीर्वाद दिया कि विघ्न नाश करने में गणेश का नाम सर्वोपरि होगा। इसीलिए भगवान गणेश को विघ्नहर्ता भी कहा जाता है। एक प्रचलित लोककथा के अनुसार भगवान शिव का एक बार त्रिपुरासुर से भीषण युद्ध हुआ। युद्ध शुरू करने से पहले उन्होंने गणेश को स्मरण नहीं किया, इसलिए वे त्रिपुरासुर से जीत नहीं पा रहे थे। उन्हें जैसे ही इसका अहसास हुआ, उन्होंने गणेश जी को स्मरण किया और उसके बाद आसानी से त्रिपुरासुर का वध करने में सफल हुए। भगवान गणेश के देशभर में कई प्रसिद्ध मंदिर हैं, जिनमें सबसे लोकप्रिय मुम्बई के प्रभादेवी में श्री सिद्धिविनायक मंदिर है, जहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु पूजा-अर्चना करते हैं। 2014 में गुजरात के मेहमदाबाद में छह लाख वर्गफुट में बना सिद्धिविनायक मंदिर भगवान गणेश का सबसे बड़ा मंदिर माना जाता है। जमीन, अचल सम्पति और चढ़ावे के आधार पर इन्दौर स्थित खजराना गणेश मंदिर सबसे धनी गणपति मंदिर है। हालांकि संचित धन के हिसाब से पुणे का दगडुशेठ गणपति मंदिर देश का सबसे धनी गणपति मंदिर है। वैसे प्रतिदिन चढ़ावे के हिसाब से मुम्बई का सिद्धिविनायक मंदिर सबसे आगे है। गणेशोत्सव वैसे तो देशभर में मनाया जाता है और लोग अपने घरों में गणपति बप्पा की पूजा करते हैं लेकिन महाराष्ट्र में इस पर्व की विशेष धूम दिखाई देती है। जगह-जगह बड़े-बड़े आकर्षक पंडाल सजाए जाते हैं, जहां लोग एकजुट होकर भक्ति रस में सराबोर होकर भगवान गणेश की पूजा करते हैं। महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की परम्परा की शुरूआत के संबंध में कहा जाता है कि यह शुरूआत पेशवाओं द्वारा की गई थी और तब पुणे के प्रसिद्ध शनिवारवाड़ा नामक राजमहल में भव्य गणेशोत्सव मनाया जाता था। सार्वजनिक रूप से महाराष्ट्र में गणेशोत्सव को बड़े पैमाने पर मनाए जाने की शुरूआत 1893 में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बालगंगाधर तिलक द्वारा आजादी की लड़ाई में लोगों को एकजुट करने के उद्देश्य से की गई थी।

स्टेट ऑफ आर्ट मॉडल ब्लड बैंक

दीपक विभाकर नाईक 'रक्तदीप'

लेखक रक्तदाता हैं।

सेवा, सद्भाव और समर्पण की त्रिवेणी

मध्यप्रदेश के सबसे बड़े शासकीय एम.वाय अस्पताल इंदौर का सेंटर। जिस तरह विरासत में हमें जो संस्कार मिलते है, हम उसी अनुसार अपने जीवन में आगे बढ़ते हुए नित नूतन सुनहरी सफलताओं से साक्षात्कार करते रहते है। हमें प्लेटफार्म मिल चुका होता है, सुपरफास्ट ट्रेन भी उस पर खड़ी है, उसका स्टॉफ भी सक्रियता से जिम्मेदारी निभाने को आतुर है, हमें तो उसमें यात्री बनकर बैठने की ईमानदार सोच को विकसित करना है। वास्तविकता के धरातल पर ये ईमानदारी ही हमारे माता-पिता और कुटुंब के प्रति सच्चा सम्मान है। ठीक इसी प्रकार रक्तदान क्या है, ये इस प्लेटफॉर्म के रूप में अनुभवी रक्तदाताओं के मार्गदर्शन से हमें मिला हुआ है। सुपरफास्ट ट्रेन अर्थात एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज के अंतर्गत आने वाले महाराजा यशवंतराव अस्पताल के डिपार्टमेंट ऑफ ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन की स्टेट ऑफ आर्ट मॉडल ब्लड सेंटर है। और इसे पूरी लगन और तन्मयता के साथ चलाने वाली है इस ब्लड बैंक की सक्रिय टीम।

रक्तदान को लेकर आज जो ये क्रांति चहुंओर दिखाई दे रही है वह किसी एक व्यक्ति या किसी एक संस्था की देन नहीं है,ये वर्षों की मिलीजुली तपस्या का परिणाम है जो विगत कुछ वर्षों से यूं परिलक्षित हो रहा है। ये सब 70 और 80 के दशक की पीढ़ी की दूरगामी सोच से संभव हुआ है। उस दशक में शुरुआत करने वाला हर रक्तदाता,ब्लड बैंक से संबद्ध हर व्यक्ति बधाई का पुण्याई पात्र है। उस दशक में जरूरतमंद के लिए रक्त की व्यवस्था करने के लिए रक्तदाताओं को ढूंढने के लिए संघर्ष करते मेडिकल स्टॉफ के लिए तो बेहतरीन वाली बधाई बनती है। इन सभी के लिए गर्व होता है क्योंकि सोशल मीडिया के न होते हुए भी परस्पर जुड़ाव की श्रृंखला इतनी प्रगाढ़ होती थी कि रक्त की जरूरत पड़ने पर रक्तग्राही के परिवार से होते हुए बात रक्तदाता तक पहुंच ही जाती थी।और शिविर भी लगते थे तो बिना किसी स्वार्थी सोच के।

इंदौर की बात करूं तो विगत साढ़े तीन दशकों से मैं एम.वाय अस्पताल की ब्लड बैंक टीम की वसुंधरायी कार्यशैली को देखते हुए आ रहा हूं। प्रदेश के सबसे बड़े शासकीय अस्पताल में हजारों मरीजों की भर्ती यथा अंतराल सदा बनी रहती है। और इनमें से सैकड़ों को रक्त की आवश्यकता भी लगती रहती है। ऐसे में यहां की ब्लड बैंक के डॉक्टर्स और संबद्ध स्टॉफ को अपने कार्य के अलावा ये दायित्व बोध भी बना रहता है कि रक्त की आपूर्ति सदा बनी रहे ताकि इमरजेंसी, एक्सीडेंट, सर्जरी, डिलीवरी केसेस के साथ ही कैंसर, थैलेसीमिया जैसी गंभीर बीमारियों के मरीजों को भी समय पर रक्त उपलब्ध हो सके।

विगत कुछ वर्षों में इंदौर शहर के आसपास के बहुत से नगरों में यथा स्थिति रक्तदान शिविर आयोजित हो रहे है। इंदौर जिले के देपालपुर,बेटमा,सांवेर,महू, गौतमपुरा तो समीपस्थ नगरों में पचोर, शाजापुर, बड़ोदिया, अवन्तिपुर, कोलाइकलां, मक्सी, सतवास, बागली, कन्नौद, काँटाफोड़ आदि जगहों पर नियमित रूप से शिविर लगते रहते है। और निमाड़ क्षेत्र की बात करें तो

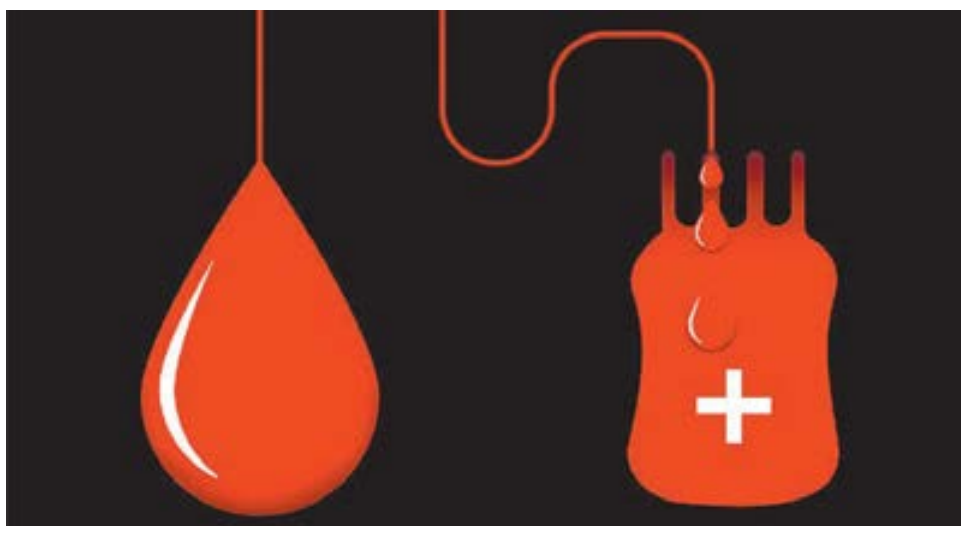

पूर्वी निमाड़ में खंडवा, मूंदी वही पश्चिमी निमाड़ में बड़वाह, भीकनगांव, झिरन्या, मंडलेश्वर, करोंदिया जैसे छोटे व मध्यम स्तर के नगरों में भी यथा अंतराल रक्तदान शिविर लगते रहे है।वही धार जिले के मनावर,राजपुर तो नीमच नगर जैसी दूरस्थ जगहों पर भी रक्तदान शिविर लगे है।

ये सब सम्भव हो पाता है स्टेट ऑफ आर्ट मॉडल ब्लड बैंक के प्रमुख और अस्पताल के अधीक्षक डॉक्टर अशोक यादव के व्यावहारिक दूरदर्शिता व कुशल मार्गदर्शन से। साथ ही ब्लड बैंक के डॉ. नरेंद्र वर्मा, डॉ. रामू ठाकुर डॉ. सचिन शर्मा, डॉ. योगेश पावड़े, डॉ. अमृता त्रिपाठी, डॉ. खुशबू लिखार, डॉ. निधि शर्मा, डॉ. नितिन अजमेरा, डॉ. सुशांत सिंह, डॉ. भानुप्रिया मुजाल्दा,काउंसलर कविता शाह, अफ़साना खान, लेब टेक्नीशियन गोविंद त्रिपाठी, संगीता जोशी,मुकेश पोरवाल,नवीन परमार,राजेश कटरे, रंजन भीमा जी, चयन ठाकरे,नर्सिंग स्टॉफ से यूसुफ, गुरमीत और चालकगणों में राजेश शर्मा,राजेन्द्र राठौर,अनिल मेहरा आदि के आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से।

इसके लिए एम.वाय की ब्लड बैंक टीम रक्तदान के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों के साथ ही रक्तदान शिविरों के संचालन के लिए भी सजग बनी रहती है।तब कहीं जाकर यहां पर भर्ती मरीजों को आवश्यकता पड़ने पर रक्त मिल पाता है।और अन्य अस्पतालों में भर्ती मरीजों के अटेंडेंट भी नियम व मापदंड अनुसार कई बार यहां से आकर टेस्टेड ब्लड लेकर जाते है। इन्हीं सब कार्यों से ही ये ब्लड बैंक देश के टॉप टेन में मानी जाती है।

जिंदगी बहुत छोटी है दोस्त,
इसे बड़ी करने का
बस एक ही तरीका है-
मानव मन होने के नाते
कुछ तो ऐसी
निःस्वार्थ निशानी छोड़िए
कि लगे आप
उस जीवनपथ से गुजरे है।
मौक़ा दीजिये अपने खून को
किसी की रगों में बहने का,
ये लाजवाब तरीका है
कई जिस्मों में ज़िंदा रहने का।

मुद्दा

डॉ. अजय खेमरिया

लेखक जुबेनाइल जस्टिस बोर्ड के पूर्व सदस्य हैं।

सहमति से यौन संबंधों की उम्र 16 साल क्यों हो ?

जाहिर है मौजूदा सरकार आंदोलनजीवी एनजीओ और इनसे जुड़े कानूनविदों के दबाव में कोई निर्णय नहीं करने जा रही है। असल में पाक्सो कानून 2012 में निर्भया कांड के बाद अस्तित्व में आया है और इसका उद्देश्य नाबालिगों को यौन शोषण से बचाना है। दूसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट यह सुनिश्चित करने की लगातार कोशिश कर रहा है कि युवाओं को पाक्सो कानून के तहत यौन रिश्तों के लिए जेल नहीं जाना पड़े। इसके लिए युवा मन के रोमांटिक रिलेशनशिप को आधार बनाया जा रहा है। पिछले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट में एमिकस क्यूरी इंदिरा जय सिंह ने कहा कि यौन स्वायत्तता मानव गरिमा का हिस्सा है और किशोरों को अपने शरीर के बारे में विकल्प चुनने की क्षमता से वंचित करना संविधान के अनुच्छेद 14,15,19 एवं 21 का उल्लंघन है। उन्होंने पिछले तीन साल में पाक्सो केसों में 180 प्रतिशत के उछाल और दोषसिद्धि की घटती दर का हवाला देकर आयु सीमा घटाने की मांग की।

सुप्रीम कोर्ट में निपुण सक्सेना बनाम संघ के विचाराधीन मामले की सुनवाई चल रही है। देश की पूर्व एडिशनल सॉलिसिटर जनरल और न्याय मित्र इंदिरा जय सिंह ने कोर्ट के सामने दलील दी है कि सहमति से यौन रिश्तों की आयु सीमा लड़कियों के लिए 18 से घटाकर 16 कर दी जानी चाहिए। इससे पहले पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ भी सार्वजनिक रूप से ऐसा ही आग्रह केंद्र सरकार से कर चुके हैं। मेघालय,मद्रास,बॉम्बे, कर्नाटक और मप्र समेत अन्य हाईकोर्ट भी इसी लाइन पर केंद्र सरकार से पाक्सो कानून में बदलाव के लिए कहते रहे हैं। यूनिसेफ इंडिया ने कुछ समय पूर्व एक ऐसी ही रिपोर्ट में दावा किया था कि देश में पाक्सो कानून युवाओं को अपराधी बना रहा है हालांकि बाद में इस रिपोर्ट को वापिस ले लिया गया। अभी देश में पाक्सो अधिनियम लागू है जिसके तहत सहमति से यौन रिश्तों के लिए 18 साल की आयु निर्धारित है।इससे कम के सभी मामले अपराध की श्रेणी में गिने जाते हैं। केंद्र सरकार ने अपने हलफनामे में स्पष्ट रूप से इस बात को दोहराया है कि सहमति से यौन रिश्तों की आयु सीमा घटाने का उसका कोई विचार नही है और अदालतों को इस मामले में हस्तक्षेप से बचना चाहिए।

जाहिर है मौजूदा सरकार आंदोलनजीवी एनजीओ और इनसे जुड़े कानूनविदों के दबाब में कोई निर्णय नही करने जा रही है। असल में पाक्सो कानून 2012 में निर्भया कांड के बाद अस्तित्व में आया है और इसका उद्देश्य नाबालिगों को यौन शोषण से बचाना है।दूसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट यह सुनिश्चित करने की लगातार कोशिश कर रहा है कि युवाओं को पाक्सो कानून के तहत यौन रिश्तों के लिए जेल नही जाना पड़े।इसके लिए युवा मन के रोमांटिक रिलेशनशिप को आधार बनाया जा रहा है। पिछले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट में एमिकस क्यूरी इंदिरा जय सिंह ने कहा कि यौन स्वायत्तता मानव गरिमा का हिस्सा है और किशोरों को अपने शरीर के बारे में विकल्प चुनने की क्षमता से वंचित करना संविधान के अनुच्छेद 14,15,19 एवं 21 का उल्लंघन है। उन्होंने पिछले तीन साल में पाक्सो केसों में180 प्रतिशत के उछाल और दोषसिद्धि की घटती दर का हवाला देकर आयु सीमा घटाने की मांग की। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि एक तरफ सरकार लड़कियों के विवाह की आयु 18 से बढ़ाकर 21 करने पर विचार कर रही है क्योंकि बाल विवाह निषिद्ध कानून के प्रभावी होने के बाबजूद देश में इनकी संख्या कम नही हो रही है।

जाहिर है केवल कानून से समाज में बुराइओं का खात्मा नही हो जाता है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि देश में नाबालिग बेटियों के साथ यौन अपराध करने वाले 50 फीसदी उनके आसपास के कुटुम्बीजन या पहचान वाले ही होते हैं। ऐसे में अगर सहमति से यौन संबंधों की आयु घटा दी जाती है तो पारिवारिक-सामाजिक दबाब में शिकायतों की संख्या नगण्य ही रह जायेगी। सच्चाई यह है कि सहमति की आड़ में वयस्क आदमी नाबालिग लड़कियों से व्यभिचार करेंगे और इस कथित सहमति के संबंधों की परिणति से पैदा हुए बच्चे क्या अवैध नहीं कहलायेंगे? विदेशी धार्मिक सामाजिक मान्यताओं में यह स्थिति स्वीकार्य हो सकती है परंतु भारत में दैहिक आजादी के नाम पर किशोरी मां बनी लड़कियों का जीवन कैसा होगा इसकी कल्पना करना कठिन नही है। तथ्य यह है कि संवैधानिक ढांचा स्पष्ट रूप से इस कानूनी धारणा का समर्थन करता है कि 18 बर्ष से कम आयु का व्यक्ति यौन गतिविधियों के लिए वैध सहमति देने में असमर्थ है। लड़कियों के विवाह की आयु 18 निर्धारित किये जाने का उद्देश्य भी यही था। 1889 में भारत में आयु सीमा 11 वर्ष थी जिसे 1891,1925,1940 और 2013 के संशोधनों के जरिये 18 तक लाया गया है।

देश में अभी मताधिकार, ड्रायविंग लाइसेंस,चुनाव लड़ने की आयु 18 से कम नहीं होने का कारण भी यही है कि इससे कम आयु को निर्णयन के लिए परिपक्व नहीं माना गया है। आयु संबन्धी इस विमर्श को विधायी और कानूनी शक्ल में आगे बढ़ाने वाला देश का वही अभिजन वर्ग है जो मूलतः अंग्रेजी में सोचता है और उसकी दृष्टि सेक्यूलर होकर एक बड़े दबाव समूह के रूप में विधायिका,कार्यपालिका और यहां तक न्यायपालिका को भी नीतिगत रूप से प्रभावित करती रही है। बुनियादी रूप से इस विषय को समझने के लिए इसकी पृष्ठभूमि को जानना भी जरूरी है। जो भारतीय व्यवस्था में एनजीओ, सेक्युलरिज्म, उदारता और प्रगतिशीलता की आड़ में समाज के सांस्कृतिक मान बिन्दुओं को दशकों से खंडित,प्रदूषित और ध्वस्त करने की संगठित कोशिश में सलंग्न है। सहमति से शारीरिक रिश्तों की आयु सीमा 16 करने का नैरेटिव भी इसी का हिस्सा है।

दावा किया जा रहा है कि बच्चों को भी 16 साल में रोमांटिक प्रेम की आजादी के साथ जीने का अधिकार होना चाहिए। पॉक्सो कानून की सख्ती के कारण भारत में 16 से 18 साल के युवाओं के रोमांटिक रिश्तों का अपराधीकरण हो रहा है।

यह भी समझना होगा भारत की लोकसंस्कृति 25 साल तक ब्रह्मचर्य आश्रम की वकालत करती है और 1925 में महात्मा गांधी ने बाकायदा यंग इंडिया में लेख लिखकर यह कहा था कि मैं 25 साल की आयु की महिला को ही विवाह संबन्धों के लिए योग्य स्वीकार करूंगा।

वस्तुतः भारतीय लोकजीवन, इसकी संयमित और कर्तव्यबोध केंद्रित जीवनचर्या के विरुद्ध पिछले 70 साल से एक संगठित तंत्र पूरी व्यवस्था पर हावी होकर काम करता रहा है। ताजा नैरेटिव इसी इकोसिस्टम का हिस्सा भर है। पिछले कुछ सालों में देश के विभिन्न उच्च न्यायालयों में ऐसी याचिकाओं की संख्या बढ़ी है जो पॉक्सो एक्ट के आयु से जुड़े प्रावधान को इसलिए हटवाना चाहते है क्योंकि यह मुस्लिम पर्सनल लॉ के लिए परेशानी का कारण बन गया है। मुस्लिम लॉ कहता है कि बालिका जैसे ही रजस्वला होगी वह विवाह के योग्य मानी जायेगी।

कभी यह आयु 15 साल थी लेकिन आज बदलती जीवनशैली में इसे 12 भी माना जाता है। किसी बालिका की इस आयु को सुरक्षित और जवाबदेह यौन संबंधों के लिए क्या कोई समाज खुद को सभ्य और सुसंस्कृत कह सकता है? सवाल यह भी है कि सहमति से यौन संबंधों की आयु 16 करने के दायरे में कौन सी भारतीय लड़कियाँ आएंगी। क्या हमारे समाज में यौन रिश्ते कभी इस उन्मुक्तता के स्तर पर रहे है जहां परिवार में 16 साल के बाद बेटियों को यौन संबन्धों के लिए खुली आजादी रही हो।

यह ठीक वैसा ही दुराग्रही आख्यान है जो शाहबानों पर चुप रहता है या ट्रिपल तलाक में सत्ता का फासीवादी एवं साम्प्रदायिक चेहरा तलाश लेता है। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण और लव जिहाद के आरोपियों को एक विधिक गलियारा उपलब्ध कराना भी इस आख्यान का मूल मन्तव्य है।

इंडिपेंडेंट थाट बनाम यूनियन ऑफ इंडिया के मामले में सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस मदन बी लोकूर एवं दीपक गुप्ता की पीठ यह स्पष्ट कह चुकी है कि उनकी राय में 18 साल से कम आयु की लड़की के साथ यौन संबन्ध बनाना बलात्कार है चाहे वह विवाहित हो या नही। वैसे पाक्सो को लेकर युवाओं के अपराधीकरण के दावे प्रामाणिक नही है क्योंकि डेटा एविडेंस फॉर जस्टिस रिफॉर्म के सहयोग से विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी द्वारा जारी एक रिपोर्ट ए डिकोड ऑफ पॉक्सो में पिछले दस सालों में दर्ज 4 लाख प्रकरणों के अध्ययन में रोमांटिक लव से जुड़े आरोपियों का आंकड़ा 20 फीसदी से भी कम बताया गया है।जाहिर है मामला थिंक टैंकों की प्रमाणिकता और उनके हिडन एजेंडे से भी सीधा जुड़ा है।

इंग्लैंड में लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन ने कुछ समय पूर्व जारी एक शोध में बताया था कि 40 फीसद लड़कियां एवं 26 फीसद लड़कों ने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने 16 साल में यौन संबन्ध बनाकर एक भूल की थी। यह उस इंग्लैंड का मिजाज है जहां शारीरिक संबन्धों के लिये 16 साल आयु को मान्यता मिली है। भारत में युवा यौन इच्छाओं के अपराधीकरण के तर्कों को स्थानीय परिवेश, स्वास्थ्य,पोषण और सामाजिकी के संदर्भ में समझने की आवश्यकता सभी स्तरों पर है।

उत्सव

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

शुभारम्भ के देवता हैं गणेश जी

छोटी-छोटी आदिम बस्तियों से निकल कर गणेश जी का प्रभुत्व अब समूचे विश्व में फैल चुका है। सबसे पहले आदिवासियों ने ही गोबर के गणेश बनाये। आज भी आदिवासियों में गोबर के ही गणेश जी बनाये जाते हैं। कुछ दशक पहले तक हमारे परिवारों में ब्याह-शादी की शुरुआत गोबर-गणेश की स्थापना के साथ होती थी। नई पीढ़ी को शायद ही भरोसा हो कि हमारे जीवन में उत्सव की परम्परा सदियों पहले गोबर-गणेश की स्थापना से शुरू हुई थी। लोक-जीवन में लम्बे समय तक गोबर गणेश का कोई विकल्प नहीं था। लोक-मान्यता है कि आह्वान करते ही गणेश जी आते हैं, और हमारे कार्य का शुभारम्भ करते हैं।

ताम्बूल के ऊपर छोटी सी सुपारी रख कर जब भी किसी ने आह्वान किया, लाभ और शुभ के आश्वासनों की पोटली ले कर गणेश जी उपस्थित हुए। गणेश जी पाषाण में भी तराशे गये, फिर भले ही वह लाल पत्थर हो या संगमरमर हो। कोई ऐसी धातु नहीं बची, जिसमें गणेश जी की प्रतिमाएँ न ढाली गई हों। पीतल, ताम्बा, कांसा, चांदी और सोने से निर्मित निराले गणेश जी बड़े-बड़े रईसों और उद्योगपतियों के आलीशान बंगलों में भी बैठाये जाते रहे हैं। वे काष्ठ में दिखाई दिये, खेत से उठाई उस मिट्टी से भी तराशे गये, जो किसान के बहते हुए पसीने से पवित्र हुई थी। गणेश जी को हमने बनाया। वे हमारी सकारात्मक ऊर्जा की मिट्टी के बने हुए हैं। सच तो यह कि वे हमारी इच्छाओं के उत्सव-पुरुष हैं।

गणेश जी ओंकारस्वरूप हैं, सूर्य के प्रतिनिधि हैं। उन्हें पृथ्वी पर उतार लाने के लिये लोगों ने तरह-तरह के जतन किये। लोक-जीवन और लोकाचार से जोड़ कर मिट्टी के गणपति बनाये गये। नाचते हुए गणपति, बैठे हुए गजवदन, ढोल बजाते लम्बोदर, लेटे हुए गौरीसुत,असुरों का संहार करते शूर्पकर्ण। हम गणपति के साथ जैसा भक्तिपूर्वक खेल खेल सकते हैं, वैसा और किसी देवी-देवता के साथ नहीं। मूर्तिकार ने उन्हें बाइक चलाते, मोबाइल देखते, लैपटॉप चलाते, क्रिकेट खेलते, शतरंज खेलते और भी न जाने किन-किन रूपों में प्रदर्शित किया। गणेश जी सब जगह फिट नजर आये। कहते हैं, महाभारत भी उनसे ही लिखवाई गई।

गणेश जी प्रथम पूज्य हैं। उन्हें पुराणों ने ही प्रथम पूज्य नहीं बनाया, वेदों में भी वे ही देवताओं में सबसे ऊपर हैं। वहाँ वे ब्रह्मणस्पति हैं, ज्ञान के देवता होने के कारण इन्द्र, अग्नि, विष्णु, वरुण और सोम सहित सब देवताओं से भी ऊपर उनकी प्रतिष्ठा है। जिस तरह वेद में वर्णित रुद्र बाद में शिव हुए, उसी तरह ब्रह्मणस्पति गणपति कहलाए। ऋग्वेद के ब्रह्मणस्पति सूक्त में ही प्रसिद्ध प्रार्थना मिलती है-'गणानां त्वा गणपतिं हवामहे', जो यजुर्वेद में 'गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे' के रूप में मिलती है। कुछ विद्वानों का मत है कि वेदों में वर्णित गणपति का गजवदन विनायक से कोई सम्बंध नहीं। किन्तु श्रीगणेश-अथर्वशीर्ष, जो गणपत्युपनिषद् के नाम से भी लोकप्रिय है, वह हमें वेदों में वर्णित गणपति के सामने ले जा कर खड़ा कर देता है।

गणेशाथर्वशीर्ष का दक्षिण भारत और उत्तर भारत में श्रद्धापूर्वक पाठ किया जाता है। तंत्रसाहित्य में इसकी महिमा का विस्तार अनंत है। इसका पाठ शुद्ध उच्चारण और आरोह-अवरोह के साथ किया जाता है। यहाँ गणपति को प्रत्यक्ष तत्व और साक्षात् आत्मा कह कर सम्बोधित किया गया है। यहाँ उन्हें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, ओंकारस्वरूप कहा गया है। उन्हें ही भूमि, जल, अनल,अनिल,आकाश भी कहा गया।

गणेश जी के उद्गम को समझने के लिये यह उपनिषद् ही हमारी सहायता करता है। पहली बार यहीं पर 'एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्' इस मंत्र के साथ उस गणपति से हमारा परिचय होता है, जो एकदन्त और वक्रतुण्ड हैं, पाश और अंकुश धारण करने वाले हैं, मूषकध्वज हैं, शूर्पकर्ण हैं, लम्बोदर है, लाल वस्त्र पहने हुए हैं, लाल चंदन से लिप्त हैं और लाल रंग के फूलों से पूजित हैं। 'शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः' कह कर यहाँ पहली

बार गणपति के शैव होने का साफ संकेत किया गया है। यहाँ वैदिक गणपति और पौराणिक गणपति जिस तरह एक हो गये हैं, उसे देख कर हमारी सांस्कृतिक विरासत और उसके समृद्ध इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

गणेश जी यक्ष की प्राचीन मूर्ति-परम्परा के साथ चलते-चलते आज जहाँ खड़े हैं, वह आर्यों की महान् सांस्कृतिक यात्रा का एक पड़ाव है। वे हमेशा भविष्य के द्वार खोलते रहने वाले देवता है, इसलिये सुदूर भविष्य में भी उन्हें चलते चले जाना है। उनका जो अभिराम स्वरूप हमारे सामने है, वह पाँचवीं-छठी शताब्दी में भी ऐसा ही था। इससे पहले बौद्ध धर्म की महायान शाखा में विघ्नेश और विरूप नायक के रूप में इनकी जो विकराल छबि थी, उसे हमने बौद्ध धर्म के अस्त हो जाने के बाद सुखकर्ता व विघ्नहर्ता के रूप में ढाल कर स्वीकार किया। इसमें गणेश जी की पुरातन और पौराणिक छबियाँ भी मिल कर एकाकार हो गई हैं।

गणेश जी ने उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम की संस्कृति को आपस में मिलाने का अद्भुत काम किया। हमारे देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिये जब समाज के संगठन की आवश्यकता महसूस की गई, तब बाल गंगाधर तिलक को गणेश जी से बड़ा कोई पुरोधा नहीं मिला। तिलक जी ने गणेशोत्सव मनाने की जो राष्ट्रीय परम्परा एक बार डाल दी, वह एक सौ बत्तीस वर्ष पूरे होने के बाद भी चल रही है। वे शुभारंभ के देवता हैं, तभी तो कोई काम आरंभ करने को 'श्रीगणेश करना' कहा जाता है।

पार्थिव गणेश की स्थापना का अर्थ है कि हमने पार्थिव सत्ता को स्वीकार किया है। किन्तु यह सत्ता अंतिम नहीं है। इसके भी आगे कुछ और है, उसके भी आगे कुछ और। जब तक हम एक सत्ता का विसर्जन नहीं करते, तब तक आगे का सत्य दिखाई नहीं देता। इसीलिये गणेश विसर्जन का विचार आया होगा। पार्थिव गणपति की स्थापना, प्राणप्रतिष्ठा और फिर उसका विसर्जन न जाने कितने सारे संदेश छोड़ जाता है। कवि कालिदास की यह उक्ति कितनी महत्वपूर्ण है-'आदानं हि विसर्गाय'। इस संसार से जो कुछ भी लेना है, वह सब विसर्जित भी करना है, चाहे वह कितना भी प्रिय क्यों न हो।

जन्म है आदान, मृत्यु है विसर्जन। यह सनातन चक्र है, जो अनवरत चलता है। विश्व का स्वभाव संचय में नहीं, विसर्जन में है। जो निरंतर विसर्जित होता है, वही चैतन्य है। जो एक जगह इकट्ठा हो जाता है, वह जड़ बन जाता है। हिन्दू धर्म 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' त्यागपूर्वक उपभोग करो, लालच मत करो,आखिर धन किसका है? इस उपनिषद् वाक्य की आधारशिला पर खड़ा है। गणेश जी की स्थापना और विसर्जन के मूल में भी यही भाव काम करता है।

आपले वाचनालय और हिंआंप की इंद्रधनुष्य साहित्य गोष्ठी

इंदौर। देशभक्ति से लेकर व्यक्ति, समाज, परिवार के सरोकारों के विविध साहित्यिक, सांगीतिक विधाओं के रंग से सराबोर रहा आपले वाचनालय और हिंदी आंदोलन परिवार, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम। इस साहित्यिक समागम में सर्वश्री आशु गुप्ता, डॉ. कृष्ण कुलश्रेष्ठ, सुधीर कुमार मिश्रा, प्रो. महेंद्र ठाकुरदास, पवन अग्रवाल, संदीप राशिनकर, सुधा भारद्वाज, वेदस्मृति, रीता सिंह , वीनू जमुआर, डॉ . पुष्पा गुजराथी, डॉ. निशा कुलश्रेष्ठ, अपर्णा कड़सकर, चित्रा मेहता, अलका अग्रवाल, डॉ.मंजू चोपड़ा, श्रीति राशिनकर ने जहां अपनी शाब्दिक विद्याओं की सतरंगी प्रस्तुति से अभिभूत किया वहीं श्याम गुंडावार, जया ठाकुरदास, अलका गुंडावार की सुरमई प्रस्तुति ने श्रोताओं को भाव विभोर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ख्यात लेखिका नरेंद्र कौर छाबड़ा ने की और कार्यक्रम का सुचारू संचालन किया वरिष्ठ लेखक और चिंतक संजय भारद्वाज ने। आभार प्रदर्शन का दायित्व निभाया मेघना और श्रेयस राशिनकर ने।

करूणाधाम में गणेशोत्सव

भोपाल। पीठाधीश्वर गुरुदेव श्री सुदेश जी शाण्डिल्य महाराज के सानिध्य में करूणाधाम आश्रम में 27 अगस्त से 6 सितंबर तक गणेश उत्सव मनाया जाएगा। इस पावन उत्सव पर 21,000 गणपति अथर्वशीर्ष के पाठ होंगे। पाठ प्रतिदिन सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक होंगे। गणेश उत्सव के दौरान विशेष कार्यक्रम भी होंगे। बुधवार 27 अगस्त को दोपहर 12 बजे महाआरती होगी। शनिवार 30 अगस्त को बच्चों के लिए माला बनाओ प्रतियोगिता दोपहर 12 बजे से होगी। रविवार 31 अगस्त को आनंद वाहिनी द्वारा भजन संध्या दोपहर 3 बजे से होगी। बुधवार 3 सितंबर डोल ग्यारस को महाआरती संध्या 7:30 बजे से होगी। महिलाओं के लिए पारंपरिक वेशभूषा प्रतियोगिता का आयोजन भी होगा। शनिवार 6 सितंबर को समापन महाआरती दोपहर 12 बजे से होगी।

विनोद नागर को मिला नरेश मेहता सम्मान

भोपाल। वरिष्ठ लेखक, समीक्षक, स्तंभकार एवं पत्रकार श्री विनोद नागर को मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के नरेश मेहता सम्मान से अलंकृत किया गया है। राजधानी के रवींद्र भवन में आयोजित भव्य अलंकरण समारोह में उन्हें यह प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान प्रदान किया गया. पुरस्कार के रूप में शाल, श्रीफल और प्रशस्तिपत्र सहित इक्यावन हजार रूपये की सम्मान निधि भेंट की गई। समारोह में पद्मश्री से विभूषित क्रिकेट कमेंटेटर सुशील दोशी, संस्कृति

विभाग के संचालक एन.पी. नामदेव और साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे ख़ास तौर पर मौजूद थे। विनोद नागर को यह सम्मान उनकी 2022 में प्रकाशित कृति 'सिने सरोकार' के लिये दिया गया है, जिसमें सिनेमा के सामाजिक सरोकारों को तलाशते 50 से अधिक आलेख संकलित हैं। भारतीय सिनेमा के बदलते परिदृश्य को रेखांकित करती यह पुस्तक लेखक ने अपने समय की लोकप्रिय फिल्म पत्रिका 'माधुरी' के मूर्धन्य संपादक स्मृतिशेष श्री अरविन्द कुमार को समर्पित की है, जिन्होंने सत्तर और अस्सी के दशक मे नागर के अनेक लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किये।

मैपकॉस्ट में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का आयोजन

भोपाल। प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) के सेंटर फॉर क्रिएटिव लर्निंग (सीसीएल), भोपाल ने द्वितीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर 105 छात्रों ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लिया, जहाँ उन्होंने आर्यभट्ट से गगनयान तक भारत के अंतरिक्ष मिशनों की रोचक जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम के दौरान सीसीएल भोपाल के प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर पंकज गोदारा ने STEM शो का संचालन किया, जबकि टीम सदस्य अंजलि पांडेय और नीलू काची ने इसरो द्वारा संचालित अंतरिक्ष गतिविधियों पर सत्र लिया। टीम सदस्य करण सिंह भिंडे ने छात्रों के बीच वाटर रॉकेट लॉन्च शो का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में साइंस शो और लिक्विड नाइट्रोजन प्रदर्शन भी आयोजित किया गया, जिसने छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान की जटिल अवधारणाओं को समझने में मदद की।

हरतालिका तीज पर महिलाओं ने शिवपूजन कर मांगी परिवार की सुख-समृद्धि

बैतूल। शहर में मंगलवार को हरतालिका तीज का पर्व बड़े श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल से ही सुहागिन महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा धारण कर नदी तट पर

पहुंचीं। वहां महिलाओं ने विधि-विधान से गौर माता का पूजन किया और अखंड सुहाग की कामना की। गौर पूजन के दौरान महिलाओं ने मिट्टी से शिव पार्वती की प्रतिमाएं बनाकर उन्हें सजाया और फल-फूल, मिठाई एवं श्रृंगार सामग्री अर्पित की। साथ ही महिलाओं ने तीज के व्रत की कथा सुनी और रात्रि जागरण किया ओर एक-दूसरे को तीज की बधाई दी। पूरे दिन शहर में धार्मिक माहौल बना रहा। इस दौरान महिलाओं ने पारंपरिक गीत गाए और तीज के झूले का आनंद लिया। महिलाओं ने कहा कि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, हरतालिका तीज का व्रत माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए किया था। तभी से यह पर्व सुहागिन महिलाएं अखंड सौभाग्य और दांपत्य सुख की कामना के लिए करती हैं ओर कहा कि हरतालिका तीज हमारे जीवन में सौभाग्य, समृद्धि और दांपत्य सुख का आशीर्वाद देती है। यह पर्व हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है।

हरतालिका तीज पर ताप्ती तट पर उमड़ी महिलाओं की भीड़

बैतूल/मुलताई। हरतालिका तीज पर गौर लाने के लिए बड़ी संख्या में महिलाएं ताप्ती तट पर पहुंची, जहा विधि विधान से पूजा अर्चना कर भगवान शिव की स्थापना के लिए गौर (रेत) प्राप्त की। जिसका गणेश चतुर्थी पर ज्वारे के साथ जल में विसर्जन किया जाएगा। हरतालिका तीज पर सुबह से ही हजारों की संख्या में महिलाएं ज्वारा लेकर ताप्ती तट पहुंची। मां ताप्ती एवं भगवान शिव की पूजा अर्चना की और भगवान शिव से अपने परिवार की सुख समृद्धि की कामना कर सुहाग की सलामती की प्रार्थना की। हरतालिका तीज के संबंध में पंडित गणेश शंकर त्रिवेदी बताते हैं कि इस दिन महिलाएं सरोवर या नदियों पर जाकर गौर के रूप में रेत घर लाती है, जिससे प्रतीक के रूप में भगवान शिव की स्थापना की जाती है। इसके उपरांत रात में भगवान शिव का पूजन होता है। इस दिन हरतालिका की कथा का, महिलाएं श्रवण कर असीम पुण्य की प्राप्ति करती है। इसके उपरांत गणेश चतुर्थी पर महिलाएं फिर ज्वारे का विसर्जन करती है। दो दिन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए उपवास रखती है। ताप्ती तट स्थित राम मंदिर के सामने नगर पालिका मुलताई ने इस बार नो व्हीकल जोन बना कर सुविधा उपलब्ध कराई है। नगर पालिका द्वारा सुरक्षा व्यवस्था के व्यापक इंतजाम किए गए हैं। ताप्ती सरोवर में सुरक्षा चैन के साथ ही रस्सी लगाई गई है, इसके अलावा नगर पालिका द्वारा नाव एवं गोताखोरों की नियुक्ति भी की गई है। नगर पालिका के कर्मचारियों को जगह-जगह तैनात किया गया है, जो स्थिति पर ड्रोन से नजर रखे हुए हैं। इसके अलावा सुरक्षा की दृष्टि से महिला पुलिसकर्मी भी परिक्रमा क्षेत्र में तैनात है।

दृष्टिकोण

सुरेश उपाध्याय
लेखक सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी हैं।

जवाबदेही, गुणवत्ता व संसाधनों के अपव्यय के सवाल

अंकेषण (ऑडिट) विभागीय स्तर की एक प्रक्रिया है जिसमे नियम, कायदो, नियोजन, क्रियांवयन परिणाम आदि बिंदुओ पर अंकेषक के गुणदोष आधारित प्रेषण (ओबजर्वेशन) होते है. अनजाने से हुई या जानबूझकर की गई भूलचूक, गलतियो, त्रुटियो, नुकसानो के साथ नियम, कानून, प्रक्रिया आदि के उल्लंघन / अवहेलना, सुझाव आदि इस रिपोर्ट का हिस्सा होते हैं. यह रिपोर्ट प्रणाली को ठीक करने, नुकसान की भरपाई करने तथा दोषी की जवाबदेही तय करने का आधार होती है. आडिट रिपोर्ट के प्रांतीय व राष्ट्रीय स्तर के कुछ बिंदुओ को समाचारो की सुर्खिया बनने, चुनाव अभियान का हिस्सा बनने तथा चुनाव परिणामो को प्रभावित करने के उदाहरण हमारी स्मृतियो में हैं. आज बहुत से दृष्य हमारी चिंताओ के केंद्र में हैं, उन पर विभागीय आडिट रिपोर्ट तथा उससे सम्बंधित प्रक्रियागत कार्यवाई होती ही होगी. इन रिपोर्ट का भय कितना है, लीपापोती कितनी होती है, चलता है का भाव (टेकन फार ग्रांटेड) की क्या स्थिति है?, यह एक अलग शोध का विषय हो सकता है.

जिन कार्यो, योजनाओ का जनता से सीधा सम्बंध है, उसमे सोशल आडिट (सामाजिक अंकेषण) की अवधारणा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है. सोशल आडिट के लिए स्थानीय संस्थाओ से जूडे अनुभवी व विशेषज्ञ, सेवानिवृत्त विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ताओ की प्रोजेक्टवार टीम बनाई जा सकती है. बगैर किसी मानदेय के यह टीम सामाजिक दायित्व की तरह अंकेषण कार्य कर अपनी रिपोर्ट सम्बंधित विभाग को सौंपे तथा सार्वजनिक भी करे. सम्बंधित विभाग इस रिपोर्ट का संज्ञान लेवे. प्रत्येक प्रोजेक्ट पर नागरिको व सोशल आडिट टीम के लिए जानकारीपरक एक बोर्ड हो जो योजना की विगत, सम्बंधित विभाग, ठेकेदार, अनुमानित लागत, समय सीमा आदि को प्रदर्शित करे.

अल्पकाल में ही बांध, तालाब का फूटना, पुल का ढहना, सडक का गड्ढो में खो जाना आदि हम देखते व सुनते हैं. इससे खेती का होने वाला नुकसान, दुर्घटनाए, जनधन व पशुधन की हानि हमारे लिए चिंता व चिंतन के विषय हैं. प्राकृतिक आपदाए (बाढ, भूस्खलन, पहाड धसान, जंगल में आग आदि) व उनसे होने वाली क्षति के साथ यह भी प्रश्न है कि क्या वे वास्तव में प्राकृतिक हैं या उनकी प्रष्ठभूमि में भी मानवीय हलचलो (छेडछाड) की भूमिका है. शहरो में प्रमुख स्थलो व चौराहो के सौंदर्यीकरण के प्रयोग व उनमे बार बार बदलाव, क्या दर्शाते हैं?. सुगम यातायात के लिए सार्वजनिक परिवहन की बी आर टी एस जैसी व्यवस्था के प्रारम्भ के समय बताए गए लाभ अचानक क्यो असुविधाजनक हो जाते हैं तथा उसे ध्वस्त करने का निर्णय लेना पडता है?. ओवरब्रीज की डिजाइन, भुजाओ की चौडाई, डक की ऊंचाई, साइड लेन की कमिया व त्रुटिया बनने के बाद ही क्यो नजर आती है?, इनका पूर्वानुमान क्यो नही किया जा सकता है?. सडको को बनाने के साथ पानी की लाइन, ड्रेनेज लाइन, स्ट्राम वाटर लाइन, अंडरग्राउंड बिजली / टेलीफोन / गैस लाइन आदि के प्रावधान क्यो नही किए जाते है? तथा निर्माणके बाद फिर तोडफोड करना पडती है. जिसे थेगडे लगाकर छोड दिया जाता है जो दुर्घटनाओ का कारण बनते हैं. निर्माण व ध्वस्त की इस प्रक्रिया में यातायात की समस्याए गम्भीर से गम्भीरतम क्यो हो जाती है?. हजारो करोड खर्च करने पर भी नदी को पुनर्जीवीत करने के प्रयास क्यो विफल हो जाते हैं ? तथा उसका स्वरुप नाले जैसा ही बना रहता है. नदी से अतिक्रमण हटाने, सीमांकन करने, गाद हटाने, नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के मानक अनुसार किनारो से तीस मीटर निर्माण न करने, किनारो पर पौधारोपण करने के बजाए सिर्फ शहरी हिस्से में एस टी पी लगाने व सौंदर्यीकरण करने से नदी कैसे पुनर्जीवित होगी?. विकास के वादो व दावो के बीच थोडी सी बारिश में शहर की बस्तिया क्यो डूब जाती है?. चैन्नाई ब बेंगलुरु में ग्रीष्म ऋतु में पेयजल का संकट तथा वर्षा ऋतु में एअरपोर्ट से लेकर बीच तक जलप्लावन के दृष्य से हम सबक क्यो नही सीखते हैं?. राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रदुषण की भयावाह स्थिति हमारे लिए खतरे का संकेत क्यो नही है? प्रकृति, पानी व पर्यावरण के लिए पहल, प्रयास व चेतना के बावजूद सकारात्मक व संतोषजनक परिणाम क्यो महसूस नही होते हैं?. किसी भी योजना के नियोजन व क्रियांवयन में इतना अंतराल क्यो हो जाता है कि अनुमानित खर्च की राशि कई गुना बढ जाती है .ऐसे अनेको उदाहरणो के बीच संसाधनो के अपव्यय, दुरुपयोग व कार्य की गुणवत्ता के प्रति संदेह के प्रश्न निरंतर बने रहते हैं. एक तरफ शहरीकरण की प्रक्रिया प्राथमिकता में है, नगरो को महानगर, महानगरो का समूह (मेट्रोपोलिटन एरिय), शहरो के विस्तारीकरण की नई नई घोषणाए है तो दूसरी ओर शहर रहने लायक बने रहने की शंकाए व चिंताए हैं.

निर्णय प्रक्रिया व विकास योजनाओ के निर्माण में जनता की भागीदारी सुनिश्चित करके जन अपेक्षानुसार विकास का मार्ग समस्याओ की गम्भीरता को कम करने में सहायक हो सकता है. साथ ही सोशल आडिट (सामाजिक अंकेषण) से कार्य की गुणवत्ता में प्रभावी सुधार हो सकता है तथा संसाधनो के अपव्यय व दुरुपयोग पर रोक लगाई जा सकती है. इस पर मंथन व विचार-विमर्श की जरुरत है।

ईमैक्स ग्लोबल अवॉर्ड से सम्मानित हुआ विक्रमोत्सव 2025

भोपाल। मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा आयोजित विक्रमोत्सव 2025 को ईमैक्स ग्लोबल अवॉर्ड (Eema& global awards 2025) द्वारा लांगस्टैंडिंग आईपी ऑफ द ईयर (Longstanding IP of the year) से सम्मानित किया गया है। ईमैक्स की टीम भोपाल आकर माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को यह सम्मान प्रदान करेगी। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष विक्रमोत्सव को मिलने वाला यह दूसरा अवार्ड है। वाउ अवार्ड एशिया 2025 (WOW Awards Asia 2025) द्वारा एशिया के शासकीय समारोह की विशेष श्रेणी (Special Event of the Year Government) में गोल्ड अवॉर्ड मिल चुका है। विगत वर्ष विक्रमोत्सव 2024 को एशिया का बिगेस्ट रिलीजियस अवार्ड मिला था। माननीय मुख्यमंत्रीजी के संस्कृति सलाहकार एवं महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने कहा कि विक्रमोत्सव 2025 का ईमैक्स ग्लोबल अवार्ड से सम्मानित होना संपूर्ण मध्यप्रदेश और भारतीय संस्कृति के लिए गर्व का विषय है। यह सम्मान इस बात का प्रमाण है कि उज्जैन

की धरती पर आयोजित विक्रमोत्सव केवल एक सांस्कृतिक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय परंपरा, गौरव और मूल्यों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का सेतु बन चुका है। इस महोत्सव ने हमारे शास्त्र, कला, संगीत, नृत्य और साहित्य को आधुनिक समय की मांगों के साथ जोड़ा है, जिससे विश्वभर में भारतीय संस्कृति की गरिमा और प्रासंगिकता और अधिक बढ़ी है। उन्होंने इस सम्मान को माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सांस्कृतिक विरासत के प्रति उनके समर्पण को समर्पित किया। श्री तिवारी कहा कि विक्रमोत्सव ने युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य किया है और साथ ही विदेशी अतिथियों को भारतीय संस्कृति की गहराई से अवगत कराया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी की सांस्कृतिक विरासत के प्रति लगाव और विकास के पथ पर आगे बढ़ने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति ही मध्यप्रदेश को गौरवान्वित कर रही विगत दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विक्रमोत्सव की सराहना करते हुए कहा कि उज्जैन के महान सम्राट विक्रमादित्य के गौरव और वैभव को जन-जन तक पहुँचाने का यह प्रयास सराहनीय है। उनका शासन काल जन-कल्याण, सुशासन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए जाना जाता है।

300 से अधिक गतिविधियाँ

विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत 300 से अधिक विभिन्न सांस्कृतिक एवं बहुआयामी गतिविधियाँ सम्पन्न हुई। इस महोत्सव में लाखों लोग भागीदार रहे जबकि सोशल मीडिया के माध्यम से करोड़ों लोग विक्रमोत्सव से जुड़े। विक्रमोत्सव की बहुआयामी गतिविधियों में मध्यप्रदेश के सभी प्रमुख शिवरात्रि मेलों का समारंभ, कलश यात्रा, विक्रम व्यापार मेला, संगीत, नृत्य, वादन, शिवोहम, आदि-अनादि पर्व समारोह, विक्रम नाट्य समोराह, चित्र प्रदर्शनियाँ, संगोष्ठी, भारतीय इतिहास समागम, राष्ट्रीय विज्ञान समागम, वेद अंताक्षरी, कोटि सूर्योपासना, शिल्प कला कार्यशाला, प्रकाशन, विक्रम पंचांग, पौराणिक फिल्मों का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, बोलियों एवं हिन्दी रचनाओं का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, 1000 ड्रोन्स की प्रस्तुति व ख्यात कलाकारों की प्रस्तुतियाँ शामिल है।

भोपाल में गणेश चतुर्थी पर लोकल हॉली-डे

आज बंद रहेंगे सरकारी दफ्तर ; भोपाल गैस त्रासदी के दिन सिर्फ शहर में छट्टी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में कल बुधवार यानी 27 अगस्त को लोकल हॉली-डे रहेगा। गणेश चतुर्थी के चलते शहर में सरकारी छुट्टी रहेगी। सभी सरकारी दफ्तर कल बंद रहेंगे और कोई कामकाज नहीं होगा। इस साल भोपाल के लिए 4 लोकल हॉली-डे घोषित किए गए थे। इनमें 27 अगस्त को गणेश चतुर्थी की छुट्टी भी शामिल है। इस वजह से सरकारी ऑफिस बंद रहेंगे और कोई कामकाज नहीं होगा। इस दिन प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री भी नहीं हो सकेगी। परी बाजार और आईएसबीटी स्थित रजिस्ट्रार ऑफिस भी बंद रहेंगे।

भोपाल गैस त्रासदी पर भी छुट्टी रहेगी

भोपाल गैस त्रासदी स्मृति दिवस 3 दिसंबर (बुधवार) को भी लोकल हॉली-डे रहेगा। यह केवल भोपाल शहर के लिए रहेगा। यानी, जिला मुख्यालय के ऑफिस बंद रहेंगे, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के ऑफिस खुले रहेंगे। बता दें कि इससे पहले 4 में से दो अवकाश हो चुके हैं। मकर संक्रांति और रंगपंचमी पर भी लोकल हॉली-डे था।

उज्जैन के पोहा फैक्ट्री में महिला की मौत

कपड़े मशीन में फंसे, सिर के बाल उखड़े ; फैक्ट्री मालिक ताला लगाकर हुआ गायब

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में मंगलवार दोपहर पोहा फैक्ट्री में हादसे में महिला कर्मचारी की मौत हो गई। महिला मशीन के पास काम कर रही थी, इस दौरान उसके कपड़े मशीन में फंस गए। इसके बाद महिला के सिर के बाल मशीन में चले गए, जिससे पूरे बाल उखड़ गए। घटना के बाद महिला को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। उज्जैन की विराट नगर क्षेत्र में रहने वाले 40 साल की रुबीना शाह छोटी मायापुरी स्थित डायमंड एग्रो पोहा फैक्ट्री में काम करती थी। मंगलवार दोपहर को फैक्ट्री में मशीन के पास काम कर रही थी। इस दौरान रुबीना के कपड़े मशीन में उलझ गए और वह मशीन की चपेट में आ गई। महिला की आवाज सुनकर मौके पर मौजूद कर्मचारियों ने तत्काल मशीन को बंद किया। लेकिन तब तक महिला के शरीर से उसके सिर के बाल उखड़ कर अलग हो चुके थे। उसके कपड़े भी मशीन में फंस गए और वह घायल हो गई। कर्मचारी, महिला को उपचार के लिए चरक अस्पताल ले गए लेकिन डॉक्टर ने महिला को मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही मौके पर चिमनगंज मंडी थाना पुलिस पहुंची। घटना के बाद फैक्ट्री मालिक ताला लगाकर गायब हो गए। चिमनगंज मंडी थाना प्रभारी गजेंद्र पचोरिया ने बताया कि पोहा फैक्ट्री मयंक जैन निवासी तुलसी नगर की है। घटना के बाद कर्मचारियों के बयान दर्ज किए गए हैं। जिसकी भी लापरवाही सामने आएगी। उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

पत्नी को गर्म चाकू से 50 से ज्यादा बार दागा

खरगोन में पीड़िता बोली- पति ने पेट पर लात मारी और हाथ-पैर बांध दिए

खरगोन (नप्र)। खरगोन में नवविवाहिता का आरोप है कि पति ने पेट पर लात मारी और हाथ-पैर बांध दिए। इसके बाद गर्म चाकू से उसे 50 से ज्यादा जगह दागा। पति उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करता है। पीड़िता का भाई उसके ससुराल पहुंचा और उसे ले आया। मामला अवरकच्छ का है। 23 साल की खुशबू की शादी 6 महीने पहले दिलीप पिपलिया से हुई थी। खुशबू का कहना है कि पति उसे पसंद नहीं करता है। पुलिस के अनुसार, रविवार रात को पीड़िता से मारपीट हुई है। सोमवार को उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। पीड़िता के पूरे शरीर में दागने के निशान हैं।खरगोन एसपी धर्मराज मीणा ने बताया- खुशबू के बयान के आधार पर धर्मेंद्र पिपलिया के खिलाफ प्रताड़ना का केस दर्ज किया गया है। घटनास्थल बड़वानी जिले के अंजड़ का है इसलिए स्थानीय पुलिस को मामला भेजा जा रहा है।

पति शराब पीकर आया और किचन में ले गया: पीड़िता खुशबू ने बताया, 2 फरवरी 2025 को बड़वानी के अंजड़ के रहने वाले दिलीप पिपलिया के साथ शादी हुई थी। ससुराल में कपड़े की दुकान है, लेकिन पति कोई काम नहीं करता। शादी के बाद दहेज को लेकर कहता है- ऐसे कैसे ससुराल आ गई। पीड़िता ने बताया, रविवार रात को पति शराब पीकर घर आया। उसने दहेज लाने के लिए कहा और मेरे पेट में लात मारी। मुझे घसीटकर किचन में ले गया। मेरे हाथ-पैर बांध दिए। सिर पर कट्टा जैसा कुछ रखकर धमकाया। गैस चूल्हे पर चाकू गर्म कर शरीर पर कई जगह दागा। सुबह इस बारे में सास-ससुर को बताया। उन्होंने दिलीप को समझाने का बोला, लेकिन बाद में कहने लगे कि मैंने ही खुद को जला लिया है।

भाई लेने पहुंचा तो उससे भी विवाद किया: खुशबू के पिता लोकेश वर्मा ने बताया, बेटी ने हमें बताया कि दामाद उसे परेशान कर रहा है। सोमवार सुबह छोटा बेटा उसे लेने अंजड़ पहुंचा। उसके ससुराल के लोगों ने बेटे के साथ विवाद किया। बड़ी मुश्किल से वह बेटी को उनके चंगुल से छुड़ाकर लाया।

भोपाल गर्भवती महिलाओं का रिकॉर्ड रखने में पीछे

डिलीवरी में से आधी गर्भवती महिलाएं निगरानी से हैं बाहर, अब अनमोल पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा

भोपाल (नप्र)। राजधानी में हर साल होने वाली डिलीवरी में से लगभग आधी गर्भवती महिलाएं स्वास्थ्य विभाग की निगरानी से बाहर हैं। स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि कितनी महिलाएं स्वस्थ हैं, कितनी एनीमिया जैसी समस्याओं से जूझ रही हैं और किन मामलों में तात्कालिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। समीक्षा में यह कमी उभरकर आई है, जिसके बाद अब सभी निजी अस्पतालों को अनमोल 2 पोर्टल पर गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण अनिवार्य करने के निर्देश जारी किए हैं। अप्रैल-अगस्त 2025 के दौरान भोपाल समेत कई जिलों में पंजीकरण पिछले साल की तुलना में भारी गिरावट दर्ज हुई। स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि निजी अस्पतालों का डेटा न होने से उच्च जोखिम गर्भावस्था की पहचान और समय पर इलाज में बाधा आ रही है, जो मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) घटाने के लक्ष्य के लिए खतरनाक संकेत है। कुल रजिस्ट्रेशन में भोपाल जिले में करीब 18 हजार की कमी दर्ज हुई है। इससे गर्भवती महिलाओं की निगरानी भी प्रभावित हुई।

दो सालों में हुए गर्भवती महिलाओं के रजिस्ट्रेशन

जिले	अप्रैल से अगस्त 2024	अप्रैल से अगस्त 2025
भोपाल	25, 933	7,755
सागर	26,130	17,528
रतलाम	14,998	8,343
विदिशा	15,372	9,204
सतना	22,221	16,243

क्यों यह प्रक्रिया जरूरी

- राष्ट्रीय स्तर पर भी मध्यप्रदेश की स्थिति चिंताजनक है।
- सैंपल रजिस्ट्रेशन सर्वे के अनुसार राज्य में प्रति एक लाख प्रसव पर मातृ मृत्यु दर 159 है।
- राष्ट्रीय औसत 88 है। सरकार ने 2030 तक यह दर 70 तक लाने का लक्ष्य रखा है।

यह आएगा बदलाव

* हर महिला का समग्र रिकॉर्ड उपलब्ध होगा
* उच्च-जोखिम मामलों की शीघ्र पहचान व रेफरल संभव होगा
* जननी सुरक्षा व प्रसूति सहायता का लक्षित भुगतान सुनिश्चित होगा
* जिले व प्रदेश स्तर पर सटीक नीति निर्माण के लिए भरोसेमंद आंकड़े मिलेंगे।

अनमोल-2 पोर्टल क्या करेगा

अनमोल आरसीएच पोर्टल में गर्भवती महिलाओं का डिजिटल पंजीकरण, हाई-रिस्क पहचान, प्रसव संबंधी रिकॉर्ड और नवजात सेवाओं की एंट्री होती है। अनमोल-2 से योजनाओं के भुगतान भी ई-केवाईसी के माध्यम से समेकित किए जा सकेंगे।

बिना निजी सरकारी समन्वय के वास्तविक निगरानी असंभव

स्वास्थ्य विभाग ने निर्देश जारी कर कहा है कि निजी अस्पताल अनमोल 2 पर गर्भवती महिलाओं की जानकारियां नियमित रूप से अपलोड करें। साथ ही आशा व सामुदायिक हेल्थ वर्कर्स को पंजीकरण बढ़ाने, घर घर सक्रिय खोज करने और स्क्रीनिंग निष्पादित करने के दायित्व दिए गए हैं। समीक्षा बैठक में कहा गया कि बिना निजी सरकारी समन्वय के वास्तविक निगरानी असंभव है। इसलिए, अस्पतालों की जवाबदेही व तकनीकी प्रशिक्षण भी अनिवार्य किया जा रहा है। भोपाल के सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा ने कहा अनमोल-2 पर समेकित पंजीकरण से रोगियों का पूरा प्रोफाइल मिलेगा और समय से हस्तक्षेप संभव होगा। अनमोल-2 के माध्यम से जननी सुरक्षा योजना व प्रसूति सहायता के भुगतान को ट्रैक कर लाभार्थी तक मदद पहुंचानी होगी।

सरकार ने ओबीसी आरक्षण पर बुलाई सर्वदलीय बैठक

जीतू पटवारी बोले- विवाद ही नहीं तो फिर क्या जरूरत ; वकीलों पर किए 100 करोड़ खर्च

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पिछले 6 सालों से कोर्ट के चक्कर में उलझा ओबीसी वर्ग के 27 फीसदी आरक्षण का मुद्दा सुलझाने मप्र सरकार ने 28 अगस्त को सर्वदलीय बैठक बुलाई है। इस बैठक को लेकर कांग्रेस ने एतराज जताया है। भोपाल में कांग्रेस के प्रदेश मुख्यालय में पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- पिछले 6 सालों से शिवराज सिंह चौहान और मोहन यादव की सरकार के कारण ओबीसी वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण देने का मामला अटका हुआ है। सिंघार ने कहा कि कमलनाथ सरकार में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने का अध्यादेश विधानसभा में लाए थे। इसका कानून बन गया। हम चाहते हैं कि ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण बिना देरी मिले। मुख्यमंत्री भी ऐसे बयान देते हैं कि वो भी ओबीसी को आरक्षण देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

पटवारी बोले- अटॉर्नी जनरल को एक पेशी के 25 लाख दिए

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि प्रदेश सरकार ने पिछले छह सालों में वकीलों पर करीब सौ करोड़ रुपए खर्च किए हैं। सुप्रीम कोर्ट में अटॉर्नी जनरल तुषार मेहता को एक पेशी के 25 लाख रुपए दिए गए। चाहे उस तारीख पर बहस हुई हो या नहीं। एक दूसरे वकील को हर पेशी पर 22 लाख रुपए दिए गए। वकीलों की टीम को अलग-अलग राशि दी गई।

6 साल में 100 करोड़ फीस दी गई

भारतीय जनता पार्टी की बी टीम ने पीछे से कोर्ट में जाकर इस अध्यादेश के खिलाफ जिरह की। इसके बाद हमने विधानसभा में कानून पारित किया, राज्यपाल से स्पष्टीकरण लिया गया और 27 प्रतिशत आरक्षण लागू करने की व्यवस्थित व्यवस्था कमलनाथ जी की कांग्रेस सरकार ने की।

पूर्व मंत्री डॉ. अरविंद भदौरिया के बंगले में चोरी

चांदी की दो मूर्ति सहित सोफा-कुर्सी, भगोने-कढ़ाई ले गए चोर ; पुलिस ने शुरू की जांच

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में पूर्व मंत्री डॉ. अरविंद भदौरिया के सरकारी बंगले में चोरी का मामला सामने आया है। चोर एल्युमीनियम के भगोने, लोहे की दो बड़ी कढ़ाई, 50 स्टील की थालियां, सोफा, कुर्सी और दो चांदी की मूर्तियों सहित गैस सिलेंडर चोरी कर ले गए। घटना के समय बंगले का चौकीदार शहर से बाहर था। लौटकर आया तब उसे चोरी का पता चला। चौकीदार की सूचना पर पड़ाव थाना पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया है। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। पूर्व मंत्री को रेसकोर्स रोड पर सरकारी बंगला-35 आवंटित है। बंगले की देखरेख के लिए हंसराज पुत्र रन सिंह भदौरिया (निवासी महाराजपुरा वासदेव नगर) को रखा है। वह 12 अगस्त को बंगले में ताला लगाकर शहर से बाहर चला गया था, 24 अगस्त की शाम को लौटा और ताला खोला तब चोरी का पता चला। बंगले में सामान बिखरा पड़ा था।

कभी-कभी आते हैं पूर्व मंत्री

यह बंगला आमतौर पर खाली रहता है। पूर्व मंत्री अरविंद भदौरिया कभी-कभी बंगले पर आते हैं। चौकीदार के शहर से बाहर रहने के दौरान बंगले पर किसी का आना-जाना नहीं हुआ।

परिवहन विभाग द्वारा वाहन रजिस्ट्रेशन के डेटाबेस में मोबाइल नम्बर अपडेशन के लिये अभियान

विभाग के सारथी पोर्टल पर दी गई है लिंक

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में वाहन के पंजीयन और ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करते वक्त आवेदक को अपना मोबाइल नम्बर दर्ज करना अनिवार्य होता है। कई बार वाहन स्वामी की जगह डीलर अपना मोबाइल नम्बर दर्ज करा देते हैं। वाहन स्वामी और डीलर द्वारा सही मोबाइल नम्बर दर्ज कराने के बाद संबंधित व्यक्ति द्वारा मोबाइल नम्बर कुछ वर्षों बाद परिवर्तित कर देने के कारण डेटाबेस में संबंधित व्यक्ति का मोबाइल नंबर अपडेट नहीं रह पाता है। मोबाइल नम्बर अपडेट करने के लिये इन दिनों परिवहन विभाग द्वारा विशेष अभियान संचालित किया जा रहा है। वाहन स्वामी अथवा डीलर नेशनल इंफोर्मेशन सेन्टर (एनआईसी) के वाहन सारथी पोर्टल पर जाकर स्वयं ही आसानी से मोबाइल नंबर अपडेट कर सकते हैं। वाहन सारथी पोर्टल पर आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से मोबाइल नम्बर अपडेट करने की ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध है। आधार में दर्ज आवेदक और उसके अभिभावक के नाम का वाहन पंजीयन और ड्रायविंग लायसेंस के डेटाबेस में दर्ज नाम से शत-प्रतिशत मिलान होने पर डेटाबेस में मोबाइल नम्बर तत्काल अपडेट हो जाता है।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य बोले- प्रेमानंद मेरे बालक समान

पहले कहा था- उनकी लोकप्रियता क्षणभंगुर, मेरे सामने एक अक्षर संस्कृत का बोलकर दिखाएं

सतना (नप्र)। चित्रकूट के तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने प्रेमानंद महाराज को लेकर उठे विवाद पर स्थिति स्पष्ट की है। उन्होंने कहा कि प्रेमानंद महाराज उनके लिए बालक समान हैं। इस स्पष्टीकरण का वीडियो सोमवार देर शाम तुलसी पीठ की ओर से जारी किया गया है। बता दें कि यह विवाद दो दिन पहले शुरू हुआ, जब एक वीडियो सामने आया। इसमें जगद्गुरु ने प्रेमानंद महाराज को संस्कृत बोलने और श्लोकों का अर्थ समझाने की चुनौती दी थी। इस पर प्रेमानंद महाराज के अनुयायियों ने विरोध जताया था। जगद्गुरु ने कहा कि वर्तमान में सनातन धर्म पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं। उन्होंने हिंदुओं की एकजुटता पर बल दिया। उन्होंने राम मंदिर के लिए हुए 500 वर्षों के संघर्ष का उल्लेख किया।

स्पष्टीकरण में रामभद्राचार्य ने क्या कहा: आज सनातन धर्म पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं, हम

सभी हिन्दुओं को बिल्कुल पारस्परिक भेद छोड़कर इकट्ठा होने की आवश्यकता है। हमने साढ़े 500 वर्ष की लड़ाई जीती, श्रीराम मंदिर हमे मिल गया और अब श्री कृष्ण भूमि और काशी विश्वनाथ भी हमें मिलेगा। रही बात प्रेमानंद की तो मैंने प्रेमानंद जी के लिए कोई भी अभद्र टिप्पणी नहीं की। वे मेरी दृष्टि में बालक... पुत्रवत हैं। एक आचार्य होने के नाते मैं सबको कहता हूं कि संस्कृत का अध्ययन करना चाहिए। जो सामान्य लोग चोला पहनकर वक्तव्य दे रहे हैं जिन्हें एक अक्षर आता-जाता नहीं। और मैं सबको कह रहा हूं प्रत्येक हिंदू को संस्कृत पढ़ना चाहिए। कहता ही नहीं आज भी मैं स्वयं पढ़ता हूं, 18-18 घंटे पढ़ता हूं, और पढ़ता रहूंगा। इसमें प्रेमानंद के लिए मैंने ऐसी कोई टिप्पणी नहीं की है। हां, चमत्कार को मैं नमस्कार नहीं करता, यह सत्य है। ये तो मैंने अपने शिष्य धीरेन्द्र शास्त्री को भी कहा है कि बेटा पढ़ो-लिखो। सब लोग पढ़ो क्योंकि भारत की दो प्रतिष्ठाएं हैं- संस्कृत और संस्कृति। भारतीय संस्कृति को जानने के लिए संस्कृत पढ़ना नितांत आवश्यक है। ये जो मेरे लिए भ्रम फैलाया जा रहा है गलत है, मैंने प्रेमानंद या किसी संत के लिए कोई भी गलत टिप्पणी नहीं की है और न करूंगा। जब भी प्रेमानंद जी मुझसे मिलने आएंगे, मैं निश्चित आशीर्वाद दूंगा, उनको हृदय से लगाऊंगा, उनके स्वास्थ्य के लिए मैं भगवान श्री राम से प्रार्थना भी करता हूं और निरंतर उनकी दीर्घायु की कामना करता रहूंगा। जगद्गुरु रामभद्राचार्य को रामचरितमानस का जानकार माना जाता है। बागेश्वर धाम प्रमुख पंडित धीरेंद्र शास्त्री खुद को उनका शिष्य बताते हैं।

कहा था- प्रेमानंद की लोकप्रियता क्षणभंगुर: तुलसी पीठाधीश्वर पद्म विभूषण जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने एक इंटरव्यू में कहा था कि अगर प्रेमानंद महाराज में चमत्कार है, तो वे उनके सामने एक अक्षर संस्कृत का बोलकर दिखाएं। मेरे द्वारा कहे गए किसी भी श्लोक का अर्थ समझाएं। उनकी लोकप्रियता क्षणभंगुर है। प्रेमानंद बालक के समान हैं। इस बयान का देशभर में लोगों ने प्रतिक्रियाएं जताई। कई संतों ने भी खुलकर कहा कि रामभद्राचार्य का यह बयान गलत है।

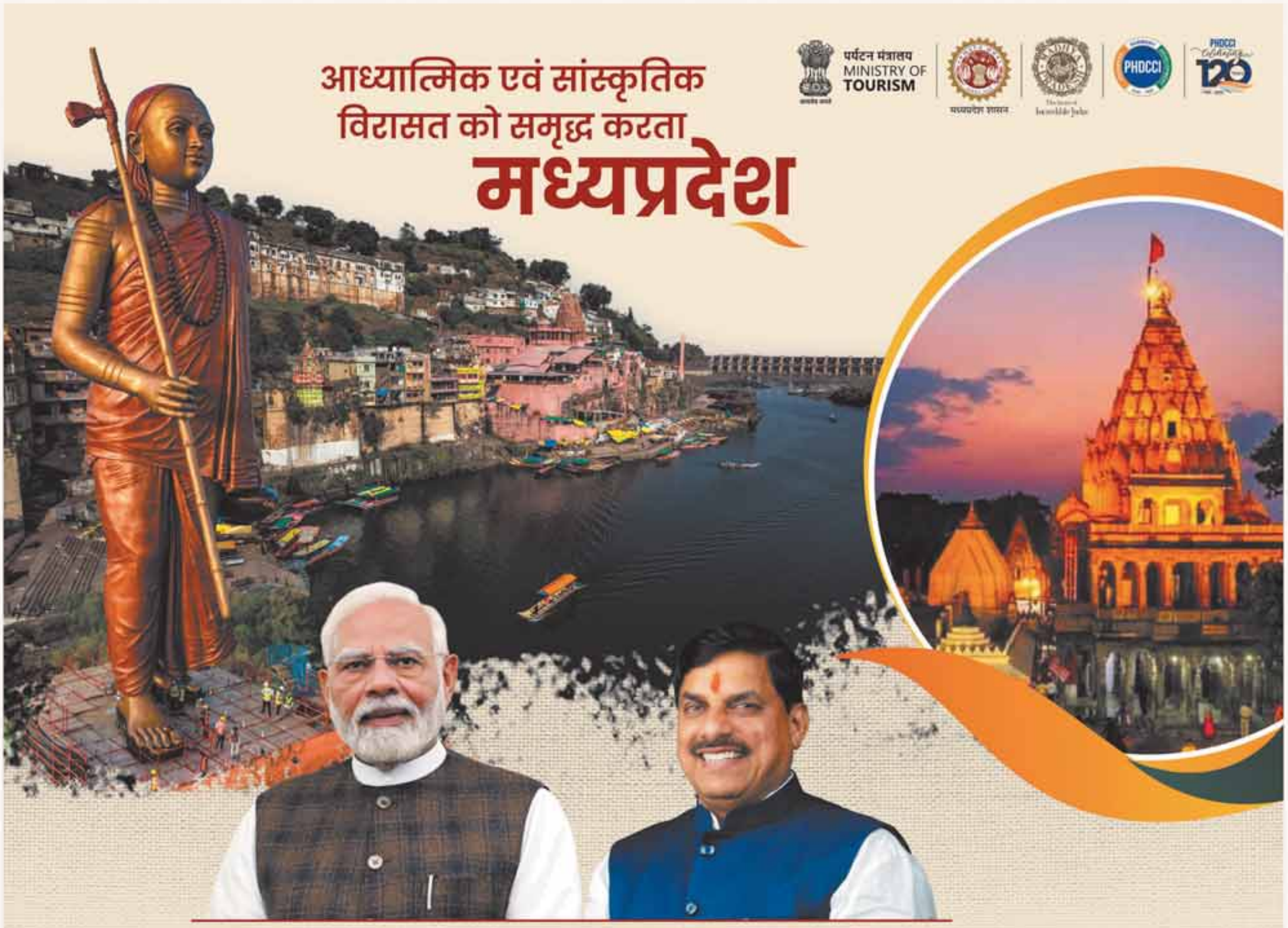

पर्यटन मंत्रालय
MINISTRY OF TOURISM
मध्यप्रदेश शासन
PHDCCI
आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक
विरासत को समृद्ध करता
मध्यप्रदेश
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
ग्लोबल
स्पिरिचुअल
टूरिज्म कॉन्क्लेव
रूह
Mantic
शुभारंभ
मुख्य अतिथि
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
विशिष्ट अतिथि
गजेन्द्र सिंह शेखावत
केंद्रीय मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय
27 अगस्त, 2025 । प्रात: 9:00 बजे । होटल अंजुश्री, उज्जैन, मध्यप्रदेश
"मध्यप्रदेश में आध्यात्मिक पर्यटन विकास के नये अध्याय की शुरुआत"
प्रमुख गतिविधियां
राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस । अधोसंरचना विकास, आध्यात्मिक पर्यटन में सांस्कृतिक संवर्धन पर चर्चा । आध्यात्मिक पर्यटन के आयामों पर संवाद
महत्वपूर्ण सत्र
मंदिर अर्थव्यवस्थाएं । महाकाल का मंडल । डिजिटल में दिव्य । पवित्र धुरी के संरक्षक
D-11090/25
सीधा प्रसारण
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@JansamparkMP
JansamparkMP